केन्द्रीय विद्यालय झुंझुनू

सृजन

नये विचारों का.....

विद्यालय पत्रिका 2018–19

CHURU BYPASS ROAD, JHUNJHUNU (RAJASTHAN) PIN-333001
PHONE NO-01592-232973 EMAIL ID- kvsjjn@gmail.com
WEBSITE- www.jhunjhunu.kvs.ac.in

केन्द्रीय विद्यालय, झुंझुनूं
KENDRIYA VIDYALAYA , JHUNJHUNU

संतोष कुमार मल्ल, भा.प्र.से.
आयुक्त
Santosh Kumar Mall, I.A.S.
Commissioner

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110016
दूरभाष : 91–11–26512579, फैक्स : 91–11–26852680
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016 (India)
Tel. : 91-11-26512579, Fax : 91-11-26852680
E-mail : kvs.commissioner@gmail.com, Website : www.kvsangathan.nic.in

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय, झुंझुनू अपनी वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है। नौनिहाल विद्यार्थियों के अंदर छिपी सृजनात्मक एवं साहित्यिक अभिरुचि को जागृत करने के लिए विद्यालय पत्रिका सबसे सशक्त माध्यम है। आशा करता हूँ कि आज विद्यालय पत्रिका में लिखने वाले हमारे विद्यार्थी कल साहित्यिक जगत के फ़लक पर चमकने वाले सितारा बनेंगे। जिन विद्यार्थियों की रचनाएं इस पत्रिका के लिए चयनित हुई हैं, मैं उनको हार्दिक बधाई देता हूँ और उन्हे प्रोत्साहित करने वाले शिक्षकों एवं अभिभावकों की भी सराहना करता हूँ।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका को आकर्षक एवं रचनात्मक बनाने के लिए प्रकाशन से जुड़े विभिन्न पहलुओं जैसे – शोध, सामग्री चयन व डिज़ाइन आदि पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जिससे पाठकों के हाथ में एक रचनात्मक एवं त्रुटिहीन पत्रिका पहुंचे। इसे ई-पत्रिका के रूप में वर्षवार विद्यालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराया जाए, ताकि पत्रिका का ई-संकलन वर्षों बाद भी सबके लिए उपलब्ध हो।

पत्रिका के प्रकाशन से संबन्धित विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं प्राचार्य को हार्दिक शुभकामनाएं।

संतोष 3/9/19

(संतोष कुमार मल्ल)
आयुक्त

प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय
झुंझुनू-333001

उदय नारायण खवाड़े
अपर आयुक्त (शैक्षिक)
U. N. Khaware
Addl. Commissioner (Acad.)

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
18, संस्थागत क्षेत्र / 18, Institutional Area,
शहीद जीत सिंह मार्ग / Shaheed Jeet Singh Marg,
नई दिल्ली–110016 / New Delhi-110016
दूरभाष / Tel. : 011-26533749
फैक्स / Fax : 011-26964366
ई–मेल / E-mail : addlcomm.acad@kvsedu.org
kvs.addlcacad@gmail.com
वेबसाइट / Website : www.kvsangathan.nic.in

MESSAGE

I am happy to know that **Kendriya Vidyalaya, Jhunjhunu** is going to publish its e-Magazine for the current session.

Vidyalaya Patrika is a fruitful forum which provides the students to ventilate their ideas which are fresh, tender and getting shape in different forms of expression. I believe that a Vidyalaya Patrika is an important aspect which reflects the vision and mission of the vidyalaya and gives the glimpse of all those plans and programmes. It is a matter of pleasure that Kendriya Vidyalayas are taking very meaningful strides towards the fulfillment of its objectives and their achievements speak volumes of quality education being provided in the vidyalayas.

I wish the vidyalaya to scale new heights of glory in the years to come. My best wishes to staff, students and parents for all their future endeavours.

(U.N. Khaware)
Additional Commissioner (Acad.)

Sh. Sumer Singh
Principal
Kendriya Vidyalaya
Churu By Pass Road
Jhunjhunu- 333001.

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
Kendriya Vidyalaya Sangathan
क्षेत्रीय कार्यालय/REGIONAL OFFICE
92,गांधीनगर मार्ग, 92, GANDHINAGAR MARG,
बजाजनगर/BAJAJ NAGAR, जयपुर/JAIPUR – 302015(RAJASTHAN)
Website : www.kvsjaipur.nic.in E-mail-kvsjpr@gmail.com/kvsjpr@rediffmail.com
Tel.:0141-2704572 Fax -0141-2706882.

यशपाल सिंह
उपायुक्त
YASHPALSINGH
DY.COMMISSIONER

संदेश

प्रिय श्री सुमेर सिंह,

यह हर्ष का विषय है कि केंन्द्रीय विद्यालय झुञ्झुनु द्वारा छात्रों और शिक्षकों की साहित्यकि प्रतिभा को मुखरित करते हुए विद्यालय पत्रिका 2018 -19 का प्रकाशन किया जा रहा है।

नव निहाल बच्चों की लेखनी से निकली नवीन रचनाएं अपने-अपने शब्द रंगों से आलोकित होकर विद्यालय के गुलशन को और अधिक महकातीं हैं। विभिन्न विचारों की अभिव्यक्ति को एकसाथ एक मंच देने का एक सशक्त माध्यम है - विद्यालय पत्रिका।

पत्रिका के माध्यम से विद्यालय में वर्ष भर आयोजित गतिविधियों की झांकि प्रस्तुत करने का भी अवसर मिलता है। विगत वर्षों में केन्द्रीय विद्यालय झुञ्झुनु की सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय भागीदारी रही है। यह विद्यालय अपनी एक विशिष्ट पहचान रखती है। इस हेतु प्राचार्य एवं सभी स्टाफ सदस्य साधुवाद के पात्र है।

सभी रचनाकारों और सहयोगी अध्यापकों को इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

आपका शुभेच्छु,

[यशपाल सिंह]

श्री सुमेर सिंह,
प्राचार्य,
केन्द्रीय विद्यालय
झुञ्झुनु ।

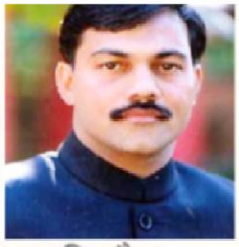

रवि जैन
आई.ए.एस.
Ravi Jain
I.A.S.

जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट
झुंझुनूं - 333001
District Collector & District Magistrate
Jhunjhunu - 333001

Message

I extend my heartiest congratulations to the Principal, staff members and students of Kendriya Vidhyalaya Jhunjhunu for bringing out their School Magazine for current session.

Kendriya Vidhyalaya is providing not only quality education to the students, but also the opportunities for their overall development. The process of overall development should engross learning so that students can demonstrate aptitude and transform a long- lasting learning.

The school magazine is a platform for the students to express their creative pursuits, which encourage originality of thought and perception. I am sure that this edition of the School Magazine will highlight the achievements of students in academics, sports and in extracurricular activities.

I also extend my heartfelt felicitation to the editorial team for bringing out the magazine and wish all the very best for the future endeavors.

(Ravi Jain)

Principal Kendriya Vidhyalaya
Jhunjhunu

Ph.:01592-234201(O), 232040(O), 01592-234202(R) Fax 01592-234201, email: col.jjn@gmail.com

सुमेर सिंह

प्राचार्य,

केंद्रीय विद्यालय झुंझुनू,

राजस्थान

सन्देश

प्रिय विद्यार्थियों! मुझे यह बताते हुए बहुत ही ख़ुशी हो रही है कि हमारे विद्यालय की पत्रिका का वर्ष 2018-19 का अंक प्रकाशनार्थ तैयार है। सबसे पहले तो मैं उन सभी शिक्षको और विद्यार्थियों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा-विशारदों ने शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य बतलाए हैं। किसी विद्वान का मत है कि 'विद्या के लिए विद्या है', तो दूसरे विद्वान का कथन है कि 'आजीविका या व्यवसाय के लिए तैयार करना ही शिक्षा का उद्देश्य है'। कई विद्वानों का मत है कि शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा अन्य सभी पहलुओं की दृष्टि से मनुष्य का विकास करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। कुछ लोग सच्चरित्र निर्माण को शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं। ये सभी उद्देश्य मिलते जुलते हैं। वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य है-मानव का सर्वांगीण विकास। मानव जीवन का जो अंतिम उद्देश्य है, उस उद्देश्य तक पहुंचना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इसके लिए हमें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक सभी नियमों का ज्ञान होना चाहिए। घर में हम माता पिता के साथ कैसे व्यवहार करें, समाज में कैसे उत्तम नागरिक बनें, साथियों के साथ कैसा व्यवहार करें, आजीविका के लिए क्या करें, सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं का क्या हल निकालें। संक्षेप में हर बात में हम पूर्ण हों, किसी में अधूरे न रहें, यही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। यदि हम अपना सर्वांगीण विकास करते हुए पुरुषार्थ प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सकें, तो हमारी शिक्षा सफल शिक्षा है,अन्यथा नहीं।

संपादक मंडल एवं विद्यार्थियों की कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण और निरंतर प्रयास के द्वारा ही विद्यालय पत्रिका का यह अंक हमारे सामने प्रस्तुत है अतः मैं इन सभी का अभिनन्दन करता हूँ और हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

जय हिन्द।

EDITORIAL

Dear Reader,

Greetings to you!!

Very few have fully realized the wealth of sympathy, compassion, sensitivity, self-respect, generosity and responsibility hidden in the soul of a child. The effort of every educator should be to recognize and unlock that treasure and KVS is an excellent example where everyone strives indefatigably for this. We need to appreciate and foster the fine blend of sensibilities in a child and thus this magazine is to be viewed as a Launchpad for the children's creative urges to blossom naturally. This humble initiative is to set the budding minds free, allowing them to roam freely in the realm of imagination and experience to create a world of beauty in words. This magazine espouses the school spirit which is built up within the school through the collective actions, thoughts and aspirations. We are pleased to present the school magazine of our vidyalaya. We have for you, from the students, a wide range of poetry, riddles, and some informative and inspirational articles.

We are grateful to our worthy Commissioner, Additional Commissioner, Deputy Commissioner, VMC Chairman, Principal, Editorial board, teachers and students for their great efforts and immense help in breathing life into these pages.

HAPPY READING!!

MANOJ KUMAR

(PGT ENGLISH)

डॉ. मुकेश कुमार टेलर
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी),
केंद्रीय विद्यालय झुंझुनू,
राजस्थान

सह-संपादक का सन्देश..

केंद्रीय विद्यालय की पत्रिका का वर्ष 2018-19 का अंक आप सभी के लिए प्रस्तुत है। विद्यालय पत्रिका के माध्यम से विद्यालय की सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ साहित्यिक रुचि का भी पता चलता है। इससे बच्चों में शब्द शक्ति और नव सृजन की कला को बढ़ावा मिलता है। विद्यालय पत्रिका इस क्षेत्र में सबसे उपयुक्त प्रयास है। इसका निरंतर बने रहना जरूरी है। छात्र-छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने और उसमें निखार लाने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है विद्यालय की पत्रिका। यूँ तो छात्र-छात्राओं में रचनात्मक प्रतिभा बहुत अधिक होती है परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें उचित मार्गदर्शन मिले। बच्चों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति के लिए पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए तभी वे अपने मन की बात लिखना सीख सकेंगे। बच्चों की रचनाओं में अपरिपक्वता तो रहती ही है परन्तु यह अपरिपक्वता ही उनकी मौलिकता की परिचायक है। अतः हमने इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए विद्यालय पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन के लिए एक छोटा-सा प्रयास किया हैं।

सभी का स्नेह और आशीर्वाद अपेक्षित है।

डॉ. मुकेश कुमार टेलर
सह-सम्पादक

Effects of Social Networking Sites on Students

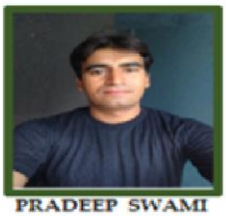

PRADEEP SWAMI
PGT - COMP.SCI.
KV JHUNJHUNU

"In modern Social Media-driven era, the terms of privacy have almost been blurred out."

Dear Students,

The internet has become the integral part of today's generation of students; from communicating through instant messages and emails to banking, travelling, studying, shopping and entertaining, internet has touched every aspect of life. The internet has provided a wide array of learning opportunities, but there are risks too.

We all need to realize that on social networking sites millions of users (from other fields) and students are actively engaged online. Social networking sites such as Facebook, Twitter, Instagram and TikTok etc. are most popularly used sites for sharing Photos, videos and other personal information and connecting with other people. The major Negative impact of social sites on students are...

Social networking sites have created varied opportunities for cyber-crimes, leakage of personal identities. Cyber-crimes have become a real threat today. Cyberbullying includes sending, posting, or sharing negative, harmful, false, personal or private information about someone else. Cyberbullying can occur through SMS, Text, and apps, or online in social media, forums, or gaming where people can view, participate in, or share content.

Students are spending too much time on social sites and it reduce the academic performance and effective face-to-face communication. Daily over use of these social sites tends to poor sleep, poor mental health, including symptoms of anxiety and depression.

Social media is often described as being more addictive than cigarettes and alcohol. Facebook, Instagram, and Snapchat are some of addiction sites. TikTok is the latest social network with highly addictive qualities.

Caution: Dear Students, if you feel that your sleep patterns have become irregular and also affecting your study then try and avoid spending a significant amount of time on social media. However, if you think quitting is the best solution for you, then quitting social media is an interesting experience.

Conclusion: This is where peers, teachers and parents need to play a major role by making the students aware of what they are missing out while spending too much time on social sites.

ACHIEVEMENTS SESSION - 2018-19

Academics

1. Class -12th Result = 98.70%
2. Class – 10th Result = 100%

Social Science Exhibition (Cluster level)

Prachi	(Debate in English)	11th Science	1st Position
Nupoor jangir	(Quiz)	11th Science	1st Position
Varun	(Hindi Kavya Path)	11th Arts	1st Position
Nishant Janu	(Quiz)	7th B	1st Position

49th K.V.S. National Sports Meet

Volleyball

- Regional (U-19) Girls (Winner)
    1. Sakshi - 10th ' A '
    2. Avisha - 9th ' A '
    3. Kanchan - 9th ' A '
    4. Nikita - 9th ' A '
    5. Sunidhi - 9th ' B '
    6. Divya - 9th ' A '
    7. Karina - 8th ' B '
    8. Manshu - 9th ' B '

- National level U-19 Girls
    1. Sakshi - 10th 'A'
    2. Avisha - 9th 'A'
    3. Kanchan - 9th 'A'
    4. Nikita - 9th 'A'
    5. Sunidhi - 9th 'B'
- S.G.F.I.
    1. Kanchan - 9th ' A '

- Regional U-14 Girls (Winner)
    1. Ronak Jakhar - 9th ' A '
    2. Parag - 8th ' B '
    3. Priti - 8th ' A '
    4. Priya - 8th ' A '

5. Nisha - 7th ' B '
6. Kumari Nikita - 8th ' A '
7. Payal - 7th ' B '

- National level U-14 Girls

1. Ronak Jakhar - 9th ' A '
2. Parag - 8th ' B '
3. Priti - 8th ' A '
4. Priya - 8th ' A '
5. Nisha - 7th ' B '
6. Kumari Nikita - 8th ' A '
7. Payal - 7th ' B '

- S.G.F.I

1. Ronak Jakhar - 9th ' A '
2. Priti - 8th ' A '
3. Parag - 8th ' B '

- Boys U-19 (Regional)

1. Jaiveer Singh - 12th Arts
2. Harsh - 12th Arts
3. Rajneesh - 11th Science
4. Om Jangid - 11th Science
5. Deepak - 10th ' B '
6. Yogesh - 11th Arts
7. Naveen
8. Aman - 9th ' B '

- National level U-19 Boys

1. Jaiveer singh - 12th Arts
2. Harsh - 12th Arts
3. Rajneesh - 11th Science
4. Om Jangid - 11th Science
5. Deepak - 10 ' B '

- Regional U-14 Boys (Winner)

1. Amit - 8th ' B '
2. Pankaj - 8th ' B '
3. Mayank - 8th ' B '
4. Sachin - 8th ' B '
5. Himanshu - 8th ' B '
6. Kapees - 8th ' B '
7. Sonu - 8th ' A '
8. Monu - 8th ' A '
9. Ankit - 8th ' A '
10. Nikhil - 8th ' B '

- National level U-19 Boys

1. Amit - 8th ' B '
2. Pankaj - 8th ' B '
3. Kapees - 8th ' B '
4. Nikhil - 8th ' B '
5. Himanshu - 8th ' B '
6. Mayank - 8th ' B '

7. Ankit - 8th ' A '
8. Sonu - 8th ' A '
9. Monu - 8th ' A '
10. Sachin - 8th ' B '

(Team Coach : Mr. Hoshiyar Singh Jangid, T.G.T. (P. & H.E.))

BASKETBALL

- Regional level U-19 Boys
    1. Nitish Dhaka
    2. Sameer khan
    3. Narender
    4. Aditya Hudda
    5. Manveer - 10th ' A '
    6. Rakshit - 10th ' A '
- National U-19 Boys
    1. Manveer

(Team Coach :Mr. Ramendra Shekhawat (Sports Coach))

CMP REPORT

The Common Minimum Programme is being successfully implemented under the guidance of our worthy Principal, Mr. Sumer Singh.

Our CMP resource room is equipped with latest HP Projector, 24" TV with TATA Sky Set Up Box, a DVD Player, one Laser Printer, one OHP and one Desktop computer with broadband connection.

TLM (Teaching learning material) :-

TLMs are purchased from time to time as per the requirement of concern subject teachers.In spite of this list of TLMs available under CMP are given below-

- Pebbles Garland (different colours of Pebbles 10 each, total pebbles 100)
- Currency.. Folding paper.
- Charts of birds and animals
- Maps – World, India, Rajasthan
- Fruits of plastic
- Charts of water resources
- Maths instrument box. and many more

Class library :-

Every class of primary section has a class library. The class teacher is issued the library books for class library as per the guidelines of CMP which are being exchanged periodically.

Activities Organized Under CMP

- Cluster level Sports, Academic and Cultural events are organized at different venues under CMP. KV Jhunjhunu was the venue of Cluster level sports meet in session 2017-18.
- The 'School Readiness programme' was organized in the month of April for the class I. Students were made comfortable to the new environment of the school.
- Student's council of class IV & V was formed in the month of July and captains were given directions to perform their assigned tasks.
- List of late bloomers is being prepared at the beginning according to the performance in their previous classes and being given sufficient remedial measures.
- Hindi poem recitation, Solo dance, Hindi story telling, Solo song, Pick-up and speak, Memory test, Group dance, Fancy dress competition, Quiz competition etc. co-curricular activities are organized under CMP in CCA.
- Grand Parents Day, Community Lunch are also organized under CMP.

THE AWAKENED CITIZEN PROGRAMME

The vision is to unable the development of awakened future citizens by allowing them to discover a value system for themselves. The awakened citizen programme is for the students of class 6,7,8 and 9[year 1, 2 and 3] as per school convenience. The programme was launched nationwide on 14th Feb. 2015.

- The Awakened Citizen Programme emphasises that each child is unique and has infinite potential which can be manifested as excellence in every walk of life.
- The programme is designed in a discussion oriented manner where the students analyse various explorations, real life situations and role models. The students think about, discuss and discover the consequences of various choices and hence get armed with a decision making framework for life.
- This key message of the programme is that each individual has infinite strength, infinite potential, and infinite goodness. This power and strength can be felt, every time we say "I can". The faith in this strength is called Aatmashradha.
- The Awakened Citizen Programme team is headed by Swami Shantatmananda, Secretary, Ramakrishna Mission, New Delhi and run by a management committee.
- The teacher of the school plays a critical role in implementing the Awakened Citizen Programme. They act as facilitators to conduct the class.
- This programme awakened the student's potential. They felt that "We can do something; we need to do something new". This effect could be seen on their studies as they were inspired to do more.

Overall, this programme was great for our students because it brought about lots of changes in their ideas and thoughts. They felt that "We are special; we need to do something new".

केंद्रीय विद्यालय संगठन के द्वारा संचालित कार्यक्रम 'बुनियाद की ओर'

(कक्षा एक से आठ तक)

कार्यक्रम में निम्न बिन्दुओं को सम्मलित किया है-

1 प्राथमिक स्तर की कक्षाओं पर विशेष ध्यान दिया जाए|

2 प्राथमिक स्तर पर भाषा में वर्णमाला पर विशेष ध्यान दिया जाए|

3 गणित में अंकों की पहचान हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में ज्ञान हो|

4 भाषा में केंद्रीय कौशलों पर विशेष ध्यान दिया जाए-

(क) श्रवण कौशल (सुनना)–

(ख) वाचन कौशल (बोलना)–

(ग) पठन कौशल (पढ़ना)–

(घ) लेखन कौशल (लिखना)–

इस के अलावा परिवेशीय जागरूकता एवं चिंतन शक्ति) पर बल देना-कल्पना)

5 भाषाओं में विद्यार्थियों को अधिक से अधिक वाचन कराना | शब्दों की पहचान करके लिख सकें|

6 विद्यार्थियों को रटने की प्रवृत्ति से दूर रखकर, मनन –चिंतन और समझने पर बल देना|

7 विद्यार्थियों के प्रति सदैव सकारात्मक सोच होनी चाहिए|

8 विद्यार्थियों के बीच कभी भी ,किसी प्रकार की नकारात्मक तुलना नहीं करनी चाहिए|

9 विद्यार्थियों की प्रत्येक बात को सुनना चाहिए फिर विचार करके अपनी बात कहनी चाहिए|

10 शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को हमेशा क्रियाकलाप (गतिविधि) देना चाहिए |

11 शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को परियोजना कार्य देना चाहिए|

12 शिक्षक के द्वारा विद्यार्थियों को समनुदेशन कार्य देना चाहिए|

13 कठिन शब्दों को लिखवाना |

केन्द्रित कौशल

(क) श्रवण कौशल

- विद्यार्थियों को पाठ ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए|
- श्रवण कौशल के अनुसार अभिनय करना

- श्रवण कौशल के अनुसार पाठ के आधार पर प्रश्न करना और सही गलत में उत्तर लेना

(ख) वाचन –कौशल (उच्चारण)

- दिए गए शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना |
- पाठ का वाचन करवाना|
- कोई बिंदु देकर वार्तालाप करवाना |
- दो मिनट का भाषण सुनना|

(ग़) पठन-कौशल (पढ़ना)

* अनुच्छेद को पढ़ने के लिए कहना|
* मौन वाचन कराना|
* अनुकरण वाचन करना|
* कविता का सस्वर वाचन करना|

(घ) लेखन- कौशल (वर्तनी)

- श्रुतिलेख लिखवाना|
- शब्दों की वर्तनी शुद्ध करना|
- शब्द श्रृंखला बनवाना
- निबंध, अनुच्छेद, पत्र, कहानी आदि लिखवाना
- परियोजना कार्य देना|
- समनुदेशन कार्य देना|
- नए शब्दों का निर्माण कराना|
- किसी घटना का वर्णन कराना|

(क) बोध प्रश्न

- दिए गए शब्दों के आधार पर वाक्य बनाना|
- दिए गए प्रश्नों के उत्तर सत्य या असत्य में लेना|
- प्रश्नों के उत्तर जानना|
- आदर्श संसद का आयोजन करना|
- एक दो शब्दों में उत्तर लेना

(च) परिवेशीय सजगता और जीवन मूल्यों सबंधी

* पाठ्य सामग्री पर आधारित परियोजना कार्य |

* पाठ्य सामग्री पर आधारित समनुदेशन कार्य |

* जीवन मूल्यों की सीख संबंधी परिचर्चा |

*कहानी, कविता, निबंध, विज्ञापन , संवाद, वाद-विवाद, परिचर्चा आदि कार्य|

प्राथमिक स्तर

1 भाषा में वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि की पहचान होनी चाहिए|

2 विद्यार्थी मन पसंद की पुस्तकों का चुनाव स्वयं करें|(विद्यालय और बाहर)

3 विद्यार्थी हिन्दी या अंग्रजी भाषा में वार्तालाप/संवाद करें|

4 विद्यार्थी भाषा में निहित ध्वनियों और शब्दों के साथ खेलने का आनन्द ले|

5 देखी, सुनी बातों, कहानी,कविता आदि को ध्यान से सुनकर अपनी भाषा में बताना और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना|

6 अपनी कल्पना से कहानी ,कविता आदि सुनाना|

7 कोई चित्र बनाकर अपनी अभिव्यक्ति प्रकट करना|

8 अपनी निजी जिन्दगी और परिवेश पर आधारित अनुभवों को सुनाना |

9 सहायक सामग्री – विद्यार्थी को पत्र-पत्रिका, कहानी की पुस्तकें , बाल-पत्रिका ,आदि देना और उन पर परिचर्चाकरना|

10 व्याकरण ज्ञान का विकास करना-संज्ञा ,सर्वनाम ,विशेषण ,विलोम ,पर्यायवाची, लिंग,विराम-चिह्न आदि|

11 नए शब्दों का ज्ञान करानौर अपरिचित शब्दकोश से खोजना|

12 विद्यार्थी के स्तारानुसार शब्दावली का ज्ञान कराना –गणित,विज्ञान ,सामाजिक अध्ययन , संगीत, चित्रकला आदि|

13 कालांश के दोराहनकिया गया कार्य से संबंधी प्रश्नोत्तरकरना|

14 विद्यार्थी के अनुसार परियोजना ,समनुदेशन , लेख आदि देना|

15 अपनी कल्पना से कहानी , कविता पत्र , निबंध आदि लिखना|

उच्च प्राथमिक स्तर

1 प्राथमिक स्तर का ध्यान रखते हुए पाठ को आगे पढ़ना |

2 रेडियो, टेलीविजन , अखबार, इंटरनेटमें देखी या सुनी गई ख़बरों को अपने शब्दों में लिखवाना|

3 केन्द्रित कौशलों पर विशेष बल देना|

4 व्याकरण ज्ञान – मुहावरे, कहावत ,निबंध, संवाद-लेखन,प्रार्थना-पत्र ,अलंकार, वाच्य ,कारक आदि का ज्ञान|

5 समूह में परिचर्चा कराना|

6 कहानी , कविता , लेख आदि लिखवाना |

7 काल्पना-शक्ति का विकास करना|

8 विद्यार्थी में स्वयं पढ़ने की प्रवृति का विकास करना|

9 पाँच मिनट का भाषण करना|

10 परियोजना और समनुदेशन कार्य देना|

11 पाठ से मौखिक और लिखित प्रश्न करना|

12 अखबार,पत्र-पत्रिका आदि पढ़ने के लिए प्रेरित करना|

(श्री नरेन्द्र कुमार, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी))

स्काउट / गाइड कार्यक्रम

1) कुल – 183
2) स्काउट – 70
3) गाइड – 26
4) कब – 56
5) बुलबुल - 31

- राज्य पुरस्कार प्राप्त 15 – विद्यार्थी
  1) स्काउट – 13 2) गाइड – 02
- तृतीय सोपान उत्तीर्ण 06 – विद्यार्थी
  1) स्काउट – 04 2) गाइड -02

Report on AEP 2019

Adolescence Education Programme

"Common sense is the collection of prejudices acquired by age eighteen "- Albert Einstein

'Adolescence is a new birth for the higher and more completely human traits are now born'. -G. Stanley Hall

In India 21% of the country's population is adolescent, young people in the age group of 10-19 years.

To guide adolescent age in proper direction ,government established the project to run AEP. This programme runs under the supervision of NCERT on behalf of MHRD.

The objective of the AEP is to provide young people accurate and relevant information, promote healthy attitude and develop skills to enable them to respond to real life situations effectively.

Different co-curricular activities are conducted under this project in each school according to NCF 2005.

Seminars, workshops and training programs are also organised under this project.

KVS is implementing this programme supported by UNFPA(United nations population fund-सयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष) for organizing life skills based activities under AEP.

In kendriya Vidyalaya jhunjhunu, various types of AEP activities were conducted in the session 2018-2019. Those are as following:

(i) Drug abuse seminar by doctor- for class XI and XII

(ii) Skit and role play based on Gender sensitisation in morning assembly (for all classes)

(iii) One day class on reproductive health by Nurse of school (for class x,xi,and xii).

(iv) Separate girls and boys guiding classes by science teacher (for class viii and ix).

(v) Quiz and debate competition on development , problem and achievement in Adolescence.

(vi) Question box for emotional barriers (for class VIII, IX, X, XI and XII)(answered by school nurse and school counselor).

(vii) Video presentations on menstrual hygiene for girls.

(viii) Group discussions with parents and students in PTM.(class IX and X)(By school principal).

Thus we are nurturing our blooming future of India successfully.

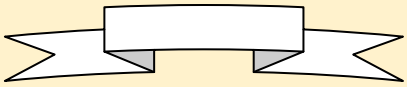

Teacher's Corner

Canvas Painting Art By: Dr. Aditi Swami (TGT-AE)

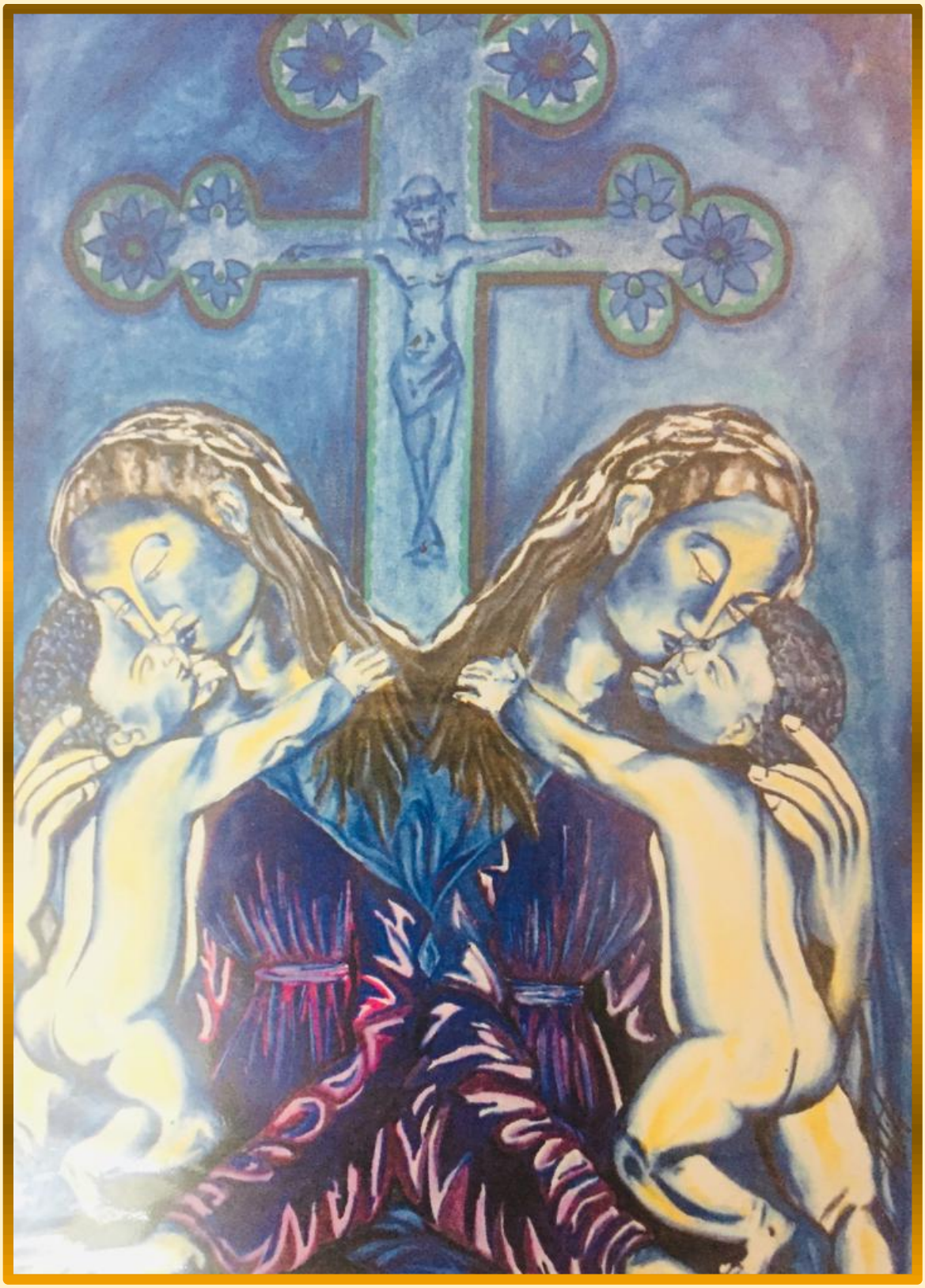

मानक हिंदी वर्तनी के सम्बन्ध में ध्यान रखने योग्य कुछ नियम

मानक हिन्दी वर्तनी का कार्यक्षेत्र केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय का है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा वर्ष 2003 में देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी के मानकीकरण के लिए अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। इस संगोष्ठी में मानक हिंदी वर्तनी के लिए नियम निर्धारित किए गए थे जिन्हें वर्ष 2012 में आईएस/IS 16500 : 2012 के रूप में लागू किया गया है। उन नियमों में से कुछ अत्यावश्यक नियम, जो हमें पता होने चाहिए, संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत हैं-

1. क और फ/फ़ के संयुक्ताक्षर

संयुक्त, पक्का , दफ़्तर आदि की तरह बनाए जाएँ, न कि संयुक्त, (पक्का लिखने में क के नीचे क नहीं) की तरह।

2. ङ, छ, ट, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ। यथा:–

- वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा आदि। (वाङ्मय, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा नहीं)

3.हल् चिह्न युक्त वर्ण से बनने वाले संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यंजन के साथ इ की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यंजन के तत्काल पूर्व ही किया जाएगा, न कि पूरे युग्म से पूर्व। यथा:– कुट्टिम, चिट्ठियाँ, बुद्धिमान, चिह्नित आदि (बुद्धिमान, चिह्नित नहीं)।

टिप्पणी : संस्कृत भाषा के मूल श्लोकों को उद्धृत करते समय संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे। जैसे:– संयुक्त, चिह्न, विद्या, विद्वान, वृद्ध, द्वितीय, बुद्धि आदि। किंतु यदि इन्हें भी उपर्युक्त नियमों के अनुसार ही लिखा जाए तो कोई आपत्ति नहीं होगी।

4. हिंदी के कारक चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक् लिखे जाएँ। जैसे :– राम ने, राम को, राम से, स्त्री का, स्त्री से, सेवा में आदि। सर्वनाम शब्दों में ये चिह्न प्रातिपादिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ। जैसे :– तूने, आपने, तुमसे, उसने, उसको, उससे, उसपर आदि (मेरेको, मेरेसे आदि रूप व्याकरण सम्मत नहीं हैं)।

5. सर्वनाम के साथ यदि दो कारक चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक् लिखा जाए। जैसे :– उसके लिए, इसमें से।

6. सर्वनाम और कारक चिह्न के बीच 'ही', 'तक' आदि का निपात हो तो कारक चिह्न को पृथक् लिखा जाए। जैसे :– आप ही के लिए, मुझ तक को।

7. द्वंद्व समास में पदों के बीच हाइफ़न रखा जाए। जैसे :– राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती संवाद, देख-रेख, चाल-चलन, हँसी-मज़ाक, लेन-देन, पढ़ना-लिखना, खाना-पीना, खेलना-कूदना आदि।

8. सा, जैसा आदि से पूर्व हाइफ़न रखा जाए। जैसे :– तुम-सा, राम-जैसा, चाकू-से तीखे।

9. तत्पुरुष समास में हाइफ़न का प्रयोग केवल वहीं किया जाए जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो, अन्यथा नहीं। जैसे :– भू-तत्व। सामान्यत: तत्पुरुष समास में हाइफ़न लगाने की आवश्यकता नहीं है। जैसे :– रामराज्य, राजकुमार, गंगाजल, ग्रामवासी, आत्महत्या आदि।

10. इसी तरह यदि 'अ-नख' (बिना नख का) समस्त पद में हाइफ़न न लगाया जाए तो उसे 'अनख' पढ़े जाने से 'क्रोध' का अर्थ भी निकल सकता है। अ-नति (नम्रता का अभाव) : अनति (थोड़ा), अ-परस (जिसे किसी ने न छुआ हो) : अपरस (एक चर्म रोग), भू-तत्व (पृथ्वी-तत्व) : भूतत्व (भूत होने का भाव) आदि समस्त पदों की भी यही स्थिति है। ये सभी युग्म वर्तनी और अर्थ दोनों दृष्टियों से भिन्न-भिन्न शब्द हैं।

11. सम्मानार्थक 'श्री' और 'जी' अव्यय भी पृथक् लिखे जाएँ। जैसे श्री राम, कन्हैयालाल जी, महात्मा जी आदि (यदि श्री, जी आदि व्यक्तिवाची संज्ञा के ही भाग हों तो मिलाकर लिखे जाएँ। जैसे :– श्रीराम, रामजी लाल, सोमयाजी आदि)।

12. संस्कृत शब्दों का अनुस्वार अन्यवर्गीय वर्णों से पहले यथावत् रहेगा। जैसे - संयोग, संरक्षण, संलग्न, संवाद, कंस, हिंस्र आदि।

13. संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचम वर्ण (पंचमाक्षर) के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए। जैसे - पंकज, गंगा, चंचल, कंजूस, कंठ, ठंडा, संत, संध्या, मंदिर, संपादक, संबंध आदि (पङ्कज, गङ्गा, चञ्चल, कञ्जूस, कण्ठ, ठण्डा, सन्त, मन्दिर, सन्ध्या, सम्पादक, सम्बन्ध वाले रूप नहीं)। बंधनी में रखे हुए रूप संस्कृत के उद्धरणों में ही मान्य होंगे। हिंदी में बिंदी (अनुस्वार) का प्रयोग करना ही उचित होगा।

14. यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा। जैसे :– वाङ्मय, अन्य, चिन्मय, उन्मुख आदि (वांमय, अंय, चिंमय, उंमुख आदि रूप ग्राह्य नहीं होंगे)।

15. पंचम वर्ण यदि द्वित्व रूप में (दुबारा) आए तो पंचम वर्ण अनुस्वार में परिवर्तित नहीं होगा। जैसे - अन्न, सम्मेलन, सम्मति आदि (अंन, संमेलन, संमति रूप ग्राह्य नहीं होंगे)।

16. अंग्रेज़ी, उर्दू से गृहीत शब्दों में आधे वर्ण या अनुस्वार के भ्रम को दूर करने के लिए नासिक्य व्यंजन को पूरा लिखना अच्छा रहेगा। जैसे :– लिमका, तनखाह, तिनका, तमगा, कमसिन आदि।

17. संस्कृत के कुछ तत्सम शब्दों के अंत में अनुस्वार का प्रयोग म् का सूचक है। जैसे - अहं (अहम्), एवं (एवम्), परं (परम्), शिवं (शिवम्)।

18. चंद्रबिंदु के बिना प्राय: अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है। जैसे :– हंस : हँस, अंगना : अँगना, स्वांग (स्व+अंग): स्वाँग आदि में। अतएव ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। किंतु जहाँ (विशेषकर शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ) चंद्रबिंदु के प्रयोग से छपाई आदि में बहुत कठिनाई हो और चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु का (अनुस्वार चिह्न का) प्रयोग किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न करे, वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु के प्रयोग की छूट रहेगी। जैसे :– नहीं, में, मैं आदि। कविता आदि के प्रसंग में छंद की दृष्टि से चंद्रबिंदु का यथास्थान अवश्य प्रयोग किया जाए। इसी प्रकार छोटे बच्चों की प्रवेशिकाओं में जहाँ चंद्रबिंदु का उच्चारण अभीष्ट हो, वहाँ मोटे अक्षरों में उसका यथास्थान सर्वत्र प्रयोग किया जाए। जैसे :– कहाँ, हँसना, आँगन, सँवारना आदि।

19. संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त हों तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए। जैसे :– 'दु:खानुभूति' में। यदि उस शब्द के तद्भव रूप में विसर्ग का लोप हो चुका हो तो उस रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल जाएगा। जैसे :– 'दुख-सुख के साथी'।

20. तत्सम शब्दों के अंत में प्रयुक्त विसर्ग का प्रयोग अनिवार्य है। यथा :– अत:, पुन:, स्वत:, प्राय:, पूर्णत:, मूलत:, अंतत:, वस्तुत:, क्रमश: आदि।

21. 'ह' का अघोष उच्चरित रूप विसर्ग है, अत: उसके स्थान पर (स) घोष 'ह' का लेखन किसी हालत में न किया जाए (अत:, पुन: आदि के स्थान पर अतह, पुनह आदि लिखना अशुद्ध वर्तनी का उदाहरण माना जाएगा)।

22. दु:साहस/दुस्साहस, नि:शब्द/निश्शब्द के उभय (दोनों) रूप मान्य होंगे। इनमें द्वित्व वाले रूप को प्राथमिकता दी जाए।

23. निस्तेज, निर्वचन, निश्चल आदि शब्दों में विसर्ग वाला रूप (नि:तेज, नि:वचन, नि:चल) न लिखा जाए।

24. अंत:करण, अंत:पुर, प्रात:काल आदि शब्द विसर्ग के साथ ही लिखे जाएँ।

25. तद्भव/देशी शब्दों में विसर्ग का प्रयोग न किया जाए। इस आधार पर छ: लिखना गलत होगा। छह लिखना ही ठीक होगा।

26. प्रायद्वीप, समाप्तप्राय आदि शब्दों में तत्सम रूप में भी विसर्ग नहीं है।

27. विसर्ग को वर्ण के साथ मिलाकर लिखा जाए, जबकि कोलन चिह्न (उपविराम :) शब्द से कुछ दूरी पर हो। जैसे :– अत:, यों है :–

28. (्) को हल् चिह्न कहा जाए न कि हलंत। व्यंजन के नीचे लगा हल् चिह्न उस व्यंजन के स्वर रहित होने की सूचना देता है, यानी वह व्यंजन विशुद्ध रूप से व्यंजन है। इस तरह से 'जगत्' हलंत शब्द कहा जाएगा क्योंकि यह शब्द व्यंजनांत है, स्वरांत नहीं।

29. संयुक्ताक्षर बनाने के नियम 2 के अनुसार ङ् छ् ट् ठ् ड् ढ् द् ह् में हल् चिह्न का ही प्रयोग होगा। जैसे : चिह्न, बुड्ढा, विद्वान आदि में।

30. तत्सम शब्दों का प्रयोग वांछनीय हो तब हलंत रूपों का ही प्रयोग किया जाए; विशेष रूप से तब जब उनसे समस्त पद या व्युत्पन्न शब्द बनते हों। यथा प्राक् :– (प्रागैतिहासिक), वाक्-(वाग्देवी), सत्-(सत्साहित्य), भगवन्-(भगवद्भक्ति), साक्षात्-(साक्षात्कार), जगत्-(जगन्नाथ), तेजस्-(तेजस्वी), विद्युत्-(विद्युल्लता) आदि। तत्सम संबोधन में हे राजन्, हे भगवन् रूप ही स्वीकृत होंगे। हिंदी शैली में हे राजा, हे भगवान लिखे जाएँ। जिन शब्दों में हल् चिह्न लुप्त हो चुका हो, उनमें उसे फिर से लगाने का प्रयत्न न किया जाए। जैसे - महान, विद्वान आदि; क्योंकि हिंदी में अब 'महान' से 'महानता' और 'विद्वानों' जैसे रूप प्रचलित हो चुके हैं।

31. संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों-का-त्यों ग्रहण किया जाए। अत: 'ब्रह्मा' को 'ब्रम्हा', 'चिह्न' को 'चिन्ह', 'उऋण' को 'उरिण' में बदलना उचित नहीं होगा। इसी प्रकार ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक, अनाधिकार आदि अशुद्ध प्रयोग ग्राह्य नहीं हैं। इनके स्थान पर क्रमश: गृहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक, अनधिकार ही लिखना चाहिए।

32. जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजनों के संयोग की स्थिति में एक द्वित्वमूलक व्यंजन लुप्त हो गया है उसे न लिखने की छूट है। जैसे :– अर्द्ध > अर्ध, तत्त्व > तत्व आदि।

33. हिंदी में ऐ (ै), औ (ौ) का प्रयोग दो प्रकार के उच्चारण को व्यक्त करने के लिए होता है। पहले प्रकार का उच्चारण 'है', 'और' आदि में मूल स्वरों की तरह होने लगा है; जबकि दूसरे प्रकार का उच्चारण 'गवैया', 'कौवा' आदि शब्दों में संध्यक्षरों के रूप में आज भी सुरक्षित है। दोनों ही प्रकार के उच्चारणों को व्यक्त करने के लिए इन्हीं चिह्नों (ऐ, ै, औ, ौ) का प्रयोग किया जाए। 'गवय्या', 'कव्वा' आदि संशोधनों की आवश्यकता नहीं है। अन्य उदाहरण हैं :– भैया, सैयद, तैयार, हौवा आदि।

34. दक्षिण के अय्यर, नय्यर, रामय्या आदि व्यक्तिनामों को हिंदी उच्चारण के अनुसार ऐयर, नैयर, रामैया आदि न लिखा जाए, क्योंकि मूलभाषा में इसका उच्चारण भिन्न है। अव्वल, कव्वाल, कव्वाली जैसे शब्द प्रचलित हैं। इन्हें लेखन में यथावत् रखा जाए। संस्कृत के तत्सम शब्द 'शय्या' को 'शैया' न लिखा जाए।

35. पूर्वकालिक कृदंत प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए। जैसे :– मिलाकर, खा-पीकर, रो-रोकर आदि।

36. कर + कर से 'करके' और करा + कर से 'कराके' बनेगा।

37. क्रिया रूपों में 'करने वाला', 'आने वाला', 'बोलने वाला' आदि को अलग लिखा जाए। जैसे :– मैं घर जाने वाला हूँ, जाने वाले लोग। योजक प्रत्यय के रूप में 'घरवाला', 'टोपीवाला' (टोपी बेचने वाला), दिलवाला, दूधवाला आदि

एक शब्द के समान ही लिखे जाएँगे। 'वाला' जब प्रत्यय के रूप में आएगा तब मिलाकर लिखा जाएगा; अन्यथा अलग से। यह वाला, यह वाली, पहले वाला, अच्छा वाला, लाल वाला, कल वाली बात आदि में वाला निर्देशक शब्द है। अतः इसे अलग ही लिखा जाए। इसी तरह लंबे बालों वाली लड़की, दाढ़ी वाला आदमी आदि शब्दों में भी वाला अलग लिखा जाएगा। इससे हम रचना के स्तर पर अंतर कर सकते हैं। जैसे :– गाँववाला - villager गाँव वाला मकान - village house

38. उर्दू से आए अरबी-फ़ारसी मूलक वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिंदी रूप में ही स्वीकार किए जा सकते हैं। जैसे :– कलम, किला, दाग आदि (क़लम, क़िला, दाग़ नहीं)। पर जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो, वहाँ उनके हिंदी में प्रचलित रूपों में यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ। जैसे :– खाना : ख़ाना, राज : राज़, फन : फ़न आदि।

39. अंग्रेज़ी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ओ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा के ऊपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए (ऑ, ॉ)।

40. फ़ुलस्टॉप (पूर्ण विराम) को छोड़कर शेष विरामादि चिह्न वही ग्रहण कर लिए गए हैं जो अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं। यथा :– - (हाइफ़न/योजक चिह्न), – (डैश/निर्देशक चिह्न), :– (कोलन एंड डेश/विवरण चिह्न), ,(कोमा/अल्पविराम), ; (सेमीकोलन/अर्धविराम), : (कोलन/उपविराम), ? (क्वश्चनमार्क/प्रश्न चिह्न), ! (साइन ऑफ़ इंटेरोगेशन/विस्मयसूचक चिह्न), ' (अपोस्ट्राफ़ी/ऊर्ध्व अल्प विराम), " " (डबल इन्वर्टेड कोमाज़/उद्धरण चिह्न), ' ' (सिंगल इन्वर्टेड कोमा/शब्द चिह्न). (), { }, [ ] (तीनों कोष्ठक), ... (लोप चिह्न), ०(संक्षेपसूचक चिह्न), ⁄ (हंसपद)।

41. विसर्ग के चिह्न को ही कोलन का चिह्न मान लिया गया है। पर दोनों में यह अंतर रखा गया है कि विसर्ग वर्ण से सटाकर और कोलन शब्द से कुछ दूरी पर रहे।

42. हिंदी के संख्यावाचक शब्दों के उच्चारण और लेखन में एकरूपता लाने हेतु केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक रूप निम्न प्रकार से है –

एक दो तीन चार पाँच छह सात आठ नौ दस

ग्यारह बारह तेरह चौदह पंद्रह सोलह सत्रह अठारह उन्नीस बीस]

इक्कीस बाईस तेईस चौबीस पच्चीस छब्बीस सत्ताईस अट्ठाईस उनतीस तीस

इकतीस बत्तीस तैंतीस चौंतीस पैंतीस छत्तीस सैंतीस अड़तीस उनतालीस चालीस

इकतालीस बयालीस तैंतालीस चवालीस पैंतालीस छियालीस सैंतालीस अड़तालीस उनचास पचास

इक्यावन बावन तिरपन चौवन पचपन छप्पन सतावन अठावन उनसठ साठ

इकसठ बासठ तिरसठ चौंसठ पैंसठ छियासठ सड़सठ अड़सठ उनहत्तर सत्तर

इकहत्तर बहत्तर तिहत्तर चौहत्तर पचहत्तर छिहत्तर सतहत्तर अठहत्तर उनासी अस्सी

इक्यासी बयासी तिरासी चौरासी पचासी छियासी सतासी अठासी नवासी नब्बे

इक्यानवे बानवे तिरानवे चौरानवे पचानवे छियानवे सतानवे अठानवे निन्यानवे सौ

(**डॉ. मुकेश कुमार टेलर,** स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी))

बेटी बचाओ

अगर बेटा वारिस है तो बेटी पारस है

अगर बेटा वंश है तो बेटी अंश है|

अगर बेटा आन है तो बेटी शान है |

अगर बेटा मान है तो बेटी गुमान है |

अगर बेटा संस्कार है तो बेटी संस्कृति है |

अगर बेटा आग है तो बेटी बाग है |

अगर बेटा दवा है तो बेटी दुआ है |

अगर बेटा भाग्य है तो बेटी विधाता है |

अगर बेटा शब्द है तो बेटी अर्थ है |

अगर बेटा गीत है तो बेटी संगीत है |

(श्री नेतराम दहिया, प्राथमिक शिक्षक)

पैसा पैसा पैसा

पैसे से बिस्तर खरीद सकते हैं, नींद नहीं |

पैसे से मूर्ति खरीद सकते हैं, भगवान नहीं |

पैसे से भोजन खरीद सकते हैं, भूख नहीं |

पैसे से ऐनक खरीद सकते हैं आँखें नहीं |

पैसे से आदमी खरीद सकते हैं, वफ़ादारी नहीं |

पैसे से दवा ख़रीद सकते हैं, स्वास्थ्य नहीं |

पैसे से किताबे खरीद सकते हैं, ज्ञान नहीं |

पैसे से पाउडर खरीद सकते हैं, सुन्दरता नहीं |

पैसे से कलम खरीद सकते हैं, विचार नहीं |

पैसे से शस्त्र खरीद सकते हैं, हौसला नहीं |

पैसे से सुख–साधन खरीद सकते हैं, शांति नहीं |

पैसे से शरीर खरीद सकते हैं, आत्मा नहीं |

(श्री नेतराम दहिया, प्राथमिक शिक्षक)

पिता

पिता, पिता जीवन है, सम्बल है, शक्ति है,
पिता, पिता सृष्टि में निर्माण की अभिव्यक्ति है,
पिता अँगुली पकड़े बच्चे का सहारा है,
पिता कभी कुछ खट्टा कभी खारा है,
पिता, पिता पालन है, पोषण है, परिवार का अनुशासन है
पिता, पिता धौंस से चलना वाला प्रेम का प्रशासन है,
पिता, पिता रोटी है, कपडा है, मकान है,
पिता, पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है,
पिता, पिता अप्रदर्शित-अनंत प्यार है,
पिता है तो बच्चों को इंतजार है,
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं,
पिता है तो बाज़ार के सब खिलौने अपने हैं,
पिता से परिवार में प्रतिपल राग है,
पिता से ही माँ की बिंदी और सुहाग है,
पिता परमात्मा की जगत के प्रति आसक्ति है,
पिता गृहस्थ आश्रम में उच्च स्थिति की भक्ति है,
पिता अपनी इच्छाओं का हनन और परिवार की पूर्ति है,
पिता, पिता रक्त निगले हुए संस्कारों की मूर्ति है,
पिता, पिता एक जीवन को जीवन का दान है,
पिता, पिता दुनिया दिखाने का अहसान है,
पिता, पिता सुरक्षा है, अगर सिर पर हाथ है,
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है,
तो पिता से बड़ा तुम अपना नाम करो,
पिता का अपमान नहीं तुम उन पर अभिमान करो,
क्योंकि माँ-बाप की कमी को कोई नहीं बाँट सकता,
और ईश्वर भी इनके आशीषों को काट नहीं सकता,
विश्व में किसी भी देवता का स्थान दूजा है,
माँ-बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है,
विश्व में किसी भी तीर्थ की यात्रा व्यर्थ है,
यदि बेटे के होते माँ-बाप असमर्थ है,
वो खुशनसीब है माँ-बाप जिनके साथ होते है,
क्योंकि माँ-बाप के आशीषों के हाथ हजारों हाथ होते है|

(श्री नेतराम दहिया, प्राथमिक शिक्षक)

वीर सपूत

वीर तू हुँकार भर, इस मौन को तू त्याग कर ललकार कर ,
तू रुक मत तेरी आवाज़ से नील गगन भी थर्रायेगा,
जो तू चाहता है निश्चित ही तुझे मिल जाएगा,
वीर तू हुँकार भर, इस मौन को तू त्याग ज़रा ललकार कर|

तेरे हौंसले है बुलंद , तेरे सपनों में जान है,
देख आँखें खोलकर, जहाँ तक है जाती तेरी नज़र,
ये आसमाँ, धरती और ये समंदर तेरा है,
क्यों डरता है व्यर्थ, जानले तू तेरी मुठ्ठियों में तूफान है,
और तेरी इन फौलादी बाजुओं में पाषाण है |

तेरी ललकार से तो रिपु भी थर्रायेगा ,
तू देखना अरि क्या स्वयं दण्डधर भी शीश नवायेगा,
वीर तू हुँकार भर, इस मौन को तू त्याग ज़रा ललकार कर,
वीर तू हुँकार भर, इस मौन को तू त्याग जार ललकार कर|

(श्री सुरेश कुमार सैनी, प्र.स्ना.शि. (हिंदी))

स्वयं की पहचान

वो रुकी नहीं, वो थमीं नहीं
वो अपने आँसुओं में बही नहीं ,
वो चली बहुत दूर तक चली ,
वो थकी नहीं, वो हारी नहीं |

वो लड़ती रही अपनों से परायों से,
वो झुकी नहीं , वो टूटी नहीं ,
वो रुकी ज़रूर कुछ देर सोचने के लिए,
पर वो वहाँ बसी नहीं |

वो जीती है आज, सोचती है कल के सुनहरे सपनों को
,
वो बीते दिनों में गुमी नहीं ,
वो जोड़ रही थी हर किसी को खुद से ,
वो परछाइयों के पीछे दौड़ी नहीं ,

वो चाह रही थी अपना आशियाना बनाना ,
वो दूसरों के तिनकों को छूई नहीं ,
वो मदमस्त पवन सी चली, उड़ी और फ़ैल गई
वादियों में
वो अपने दु:ख में मोम सी पिघली नहीं

वो ख़ामोश थी पर बोल रही थी उसकी आँखें ,
वो खुद के शब्दों में उलझी नहीं,
वो सवाल बनी नहीं औरों के लिए ,
वो दूसरों के जवाबों से बहली नहीं ,
वो रोज करती करती है खुद से खुद की जंग ,
वो औरों के तानों से छलनी हुई नहीं ,
वो चाहती है जीना, वो जीती है जीवन अपना,
वो अपने जीवन का दु:ख मानती नहीं |

वो रुकी नहीं वो थमीं नहीं ,
वो अपने आँसुओं में बही नहीं |

(डॉ .अदिति स्वामी,
प्र.स्ना.शि. (कला))

संस्कृतम्

शिक्षक दिवसः

डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन् महाभागः भारतदेशस्य द्वितीय राष्ट्रपति आसीत् यस्य जन्म सितम्बर मासस्य पंचमे दिनांके 1888 तमे वर्षे अभवत्|तस्य जन्मदिवसः शिक्षक-दिवस रूपेण आयोज्यते|

अयं बाल्यकाले मेधावी छात्रः आसीत्| सः तिरुपति-बेल्लोरस्थाने चेन्नई नगरे च शिक्षां प्राप्तवान् | सः मैसूर नगरे कोलकातानगरे च शिक्षां प्राप्तवान् | सः 1952 तमे वर्षे भारतवर्षस्य उपराष्ट्रपतिः अभवत्| तदनन्तरं 1962 वर्षतः 1967 वर्षपर्यंतं सः भारतवर्षस्य सर्वोच्चपदं राष्ट्रपतिपदं अलंकृतवान् | डॉ॰राधाकृष्णन् महाभागः जातिगतं भेदभावं विहाय मानवतावादि-दृष्टिकोणस्य प्रबलपक्षधरः आसीत्| सः शिक्षकात् राष्ट्रपतिपदपर्यंतं स्वप्रगतियात्राम् अकरोत्| शिक्षकस्य गुरुतरं महत्वम् प्रतिपादयन् सः स्वजन्मदिवसं शिक्षक-दिवस रूपेण आयोजयितुं निर्णीतवान्| अयं दिवसः संपूर्णे राष्ट्रे हर्षोल्लासेन सह आयोज्यते| अस्मिन दिवसे शिक्षाजगतः विविध क्षेत्रेषु उत्कृष्टं कार्यकर्तृणां शिक्षकानां विद्यालयेषु,जिलास्तरेषु,राष्ट्रियस्तरे च सम्मानं अभिनंदनं च क्रियते| छात्राः राष्ट्रियस्तरे च सम्मानं अभिनंदनं च क्रियते| छात्राः शिक्षकाणां सम्मानं कुर्वन्ति| शिक्षक दिवसःकस्मै न रोचते|

⇨ अनिशा, दसवीं 'अ'

संस्कृतस्य अर्थम्

संस्कृतं- स्+अ+म्+स्+क्+ऋ+त्+अ+म्

स्- संस्कारः

अ-अध्ययनं

म्-माधुर्यं

स्-सौजन्यं

क्-कला

ऋ-ऋक्

त्-तारतम्य

अ-आनन्दं

म्- मुक्तिः

⇨ प्रिया कुमारी, सातवीं'ब'

संस्कृत श्लोक

1.अलसस्य कुतो विद्या,अविद्यस्य कुतो धनं|

अधनस्य कुतो मित्रं,अमित्रस्य कुतः सुखम्||

अर्थात्-आलसी को विद्या कहाँ,अनपढ़/मूर्ख को धन कहाँ,निर्धन को मित्र कहाँ और अमित्र को सुख कहाँ|

2.आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपुः|

नास्त्युद्यमसमो बंधुः कृत्वा यं नावसीदति||

अर्थात्-मनुष्य के शरीर में रहने वाला आलस्य ही (उनका) सबसे बड़ा शत्रु होता है| परिश्रम जैसा दूसरा (हमारा) कोई अन्य मित्र नहीं होता क्योंकि परिश्रम करने वाले को कभी दुःख नहीं होता|

3.यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्|

एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति||

अर्थात्-जैसे एक पहिये से रथ नहीं चल सकता उसी प्रकार बिना पुरुषार्थ के भाग्य सिद्ध नहीं हो सकता|

4.अग्निना सिच्यमानोऽपि वृक्षो वृद्धिं न चाप्नुयात्|

तथा सत्यं विना धर्मः पुष्टिं नायाति कर्हिचित्||

अर्थात्-आग से सींचा गया पेड़ कभी बड़ा नहीं होता,जैसे सत्य के बिना धर्म कभी स्थापित नहीं होता|

⇨ ईशा चौधरी, सातवीं 'ब'

भारते एकता

एकता विधीयताम् भारते
अखंडता विधीयताम् भारते
अत्र तु वसंती बौद्धाः अपि
पारसी सिक्ख मुस्लिमाः अपि
प्रेम्णा वसंती एव भारते
भारते तु भाषायु विभिन्नता
भारते तु धर्मेषु विविधता
भाषायाँ आदर तु क्रियताम्
भुयता धर्म निपेक्षताम्|
भारतं न खण्डितं भविष्यति
रक्ष्यताम् अस्य एक सूत्रताम्
एकता विधीयताम् भारते
अखंडता विधीयताम् भारते |

⇨ दीक्षा यादव, आठवीं 'ब'

वायुगोलकं

वायुगोलकं वायुगोलकं
रक्तं पीतं, नीलं हरितं
श्वेतं, कृष्णम्, चित्रकर्बुरं
बंभु पाव्लं वायुगोलकं |
अरुण, कपिलं, विविधवर्णक,
चित्ररञ्जित वायुगोलकं |
बालः, शिशवः आराच्छुत भो
क्रीणीध्वं रे वायुगोलकं |
क्रीडयान ननु वायुगोलकं
उपहराय च वायुगोलकं |
विनोदाय खलु वायुगोलकं
ताषाणाय अपि वायुगोलकं |
एकरूप्यके एकं एकं,
वायुपूरितं वायुगोलकं |
मनोमोहकं मनोमोदकं
क्रीणीध्वं रे वायुगोलकं ||

⇨ समा, छठी 'स'

वैज्ञानिक राष्ट्रपति

भारतरत्न डॉ॰ ए॰ पी॰ जे॰ अब्दुलकलामः राष्ट्रपतेः पूर्व विश्वप्रसिद्धः वैज्ञानिकः अस्ति| भगवान् रामेण प्रदत्तः रामेश्वरनाम्नि नगरे सामान्य परिवारे अस्य जन्मः अभवत| अस्य प्रेरणसत्रोतः एकः हिन्दू अध्यापकःआसीत्| पठनकार्येण सह समाचार पत्राणि बिक्रीयं स्वपरिवारस्य सहायताम् अकरोत् स्वप्रतिभया च एषु स्थाने ये पंच परमाणु विस्फोटाः कृता एषु कलाममहोदस्य महत्वपूर्णा भूमिका आसीत| वीणवादनं प्राचीनं संस्कृतवांगमयं च कलाम महोदयाय अत्यधिक रोचते| स्निर्मितेभ्यः प्रक्षेपास्त्रेभ्यः नामानि अग्नित्रिशूल-पृथ्वी-इत्यादिनि अब्दुलकलाम महोदयेन दत्तानि अनेन अस्य जीवने संस्कृतस्य प्रभावः स्पष्टम् एव लक्ष्यते|एषः महोदयः अस्माकम् देशस्य राष्ट्रपति पदम् अलंकरोति|

⇨ विजेता चौधरी, अष्टमी 'ब'

संस्कृत-भाषा

संस्कृतभाषा देवभाषा अस्ति । इयं भाषा सर्वासां भाषाणां जननी अस्ति । प्राचीनकाले संस्कृतभाषा लोकभाषा आसीत् । अस्यां भाषायां बहवः कवयः संजाताः । तेषु महाकविः कालिदासः महर्षिः वाल्मीकिः श्रीवेदव्यासः च प्रसिद्धाः सन्ति । संस्कृतेन एव अस्माकं षोडश संस्काराः आजन्म-मृत्युपर्यन्तं सम्पद्यन्ते । वेदाः, रामायणं, महाभारतं, पुराणानि धर्मशास्त्रादयः च ग्रन्थाः संस्कृतभाषायामेव सन्ति । राष्ट्रियैकतायां अनेकानि सुभाषितानि वचनानि च सन्ति यानि जीवनोपयोगानि अपि सन्ति । अतएव अस्माभिः संस्कृतभाषा मनसा पठितव्या ।

⇨ विजेता चौधरी, कक्षा-अष्टमी-ख

लोकहितम् मम करणीयम्

मनसा सततम् स्मरणीयम्

वचसा सततम् वदनीयम्

लोकहितम् मम करणीयम् ॥

न भोग भवने रमणीयम्

न च सुख शयने शयनीयम्

अहर्निशम् जागरणीयम्

लोकहितम् मम करणीयम् ॥१॥

न जातु दुःखम् गणनीयम्

न च निज सौख्यम् मननीयम्

कार्य क्षेत्रे त्वरणीयम्

लोकहितम् मम करणीयम् ॥२॥

दुःख सागरे तरणीयम्

कष्ट पर्वते चरणीयम्

विपत्ति विपिने भ्रमणीयम्

लोकहितम् मम करणीयम् ॥३॥

गहनारण्ये घनान्धकारे

बन्धु जना ये स्थिता गह्वरे

तत्र मया सञ्चरणीयम्

लोकहितम् मम करणीयम् ॥४॥

(शिवानी, कक्षा-पञ्चमी –ख द्वारा प्रस्तुत)

वयं बालका भारतभक्ताः

वयं बालका भारतभक्ताः

वयं बालिका भारतभक्ताः

वयं हि सर्वे भारतभक्ताः

पृथ्वीं स्वर्गं जेतुं शक्ताः ।। वयम् -- ।।

वयं सुधीराः वयं सुवीराः

हृष्टमानसाः पुष्टशरीराः

भूरि पठामो भूरि लिखामो

भवितास्मो जनहिते नियुक्ताः ।। वयम् -- ।।

जातिधर्ममतभेदं त्यक्त्वा

भारतवर्षं पूज्यं मत्वा

भगवद्भावं हृदये धृत्वा

भारतसेवायामनुरक्ताः ।। वयम् -- ।।

(तन्वी चौधरी , कक्षा-अष्टमी –क द्वारा प्रस्तुत)

श्रीश्रीसंस्कृतभाषा

वाणीनां वन्द्यतमा श्रीश्रीसंस्कृतभाषा ।
अवतिष्ठो वेदनिधिः साहित्यं सरसोब्धिः ।
ज्ञानिनां पुण्यतमा श्रीश्रीसंस्कृतभाषा ।
।। वाणीनां वन्द्यतमा ----।।
व्यासकालिदासादिचाणक्यबाणादि
सर्वानमराः कृतवान् श्रीश्रीसंस्कृतभाषा ।
।। वाणीनां वन्द्यतमा ----।।
भारतस्य प्रतिष्ठायां सर्वस्य देववाणी ।
जनानां कल्याणं कर्त्री श्रीश्रीसंस्कृतभाषा ।
।। वाणीनां वन्द्यतमा ----।।

(हेरम्ब, कक्षा-अष्टमी –ग द्वारा प्रस्तुत)

एषा मम धन्या माता

या मां प्रातः शय्यातः
जागरयति सम्बोधनतः।
हरिस्मरणं या कारयति।
आलस्यं मम नाशयति।। एषा मम...।

कुरु दत्तं गृहकार्यम् त्वम्,
कुरु सुत! पाठाभ्यासं त्वम्।
आदेशं सा ददाति एवम्
योजयते कार्ये नित्यम्।। एषा मम...।

मधुरं दुग्धं ददाति या
स्वादु फलं च ददाति या।
यच्छति मह्यं मिष्टान्नम्
यच्छति मह्यं लवणान्नम् ।। एषा मम...।

कार्यम् सम्यक् न करोमि यदा,
अपराधं विदधामि यदा।
कलहं कुर्वन् रोदिमि यदा
तदा भ्रशं मां तर्जयति या।। एषा मम...।

(नूपुर जाङ्गीड, कक्षा-द्वादशी-क द्वारा प्रस्तुत)

संस्कृत-श्लोकाः

न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः ।

अर्थतस्तु निबध्यन्ते मित्राणि रिपवस्तथा ॥

हिन्दी अर्थ- कोई किसी का मित्र नहीं है और न ही कोई किसी का शत्रु, कार्यवश लोग मित्र और शत्रु बनते हैं |

वनानि दहतो वह्नेः सखा भवति मारुतः ।

स एव दीपनाशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ॥

हिन्दी अर्थ- वन में आग लगने के समय जो पवन अग्नि से मैत्री करता है अर्थात उसे जलाने में मदद करता है, वही पवन दीपक को बुझा देता है ! दुर्बल से मैत्री कौन करे ?

कस्यैकान्तं सुखम् उपनतं, दुःखम् एकान्ततो वा।

नीचैर् गच्छति उपरि च, दशा चक्रनेमिक्रमेण॥

हिन्दी अर्थ- किसी ने केवल सुख ही देखा है और किसी ने केवल दुःख ही देखा है,जीवन की दशा एक चलते पहिये के घेरे की तरह है जो क्रम से ऊपर और नीचे जाता रहता है॥

⇨ शुभम, कक्षा-दशमी-क द्वारा प्रस्तुत

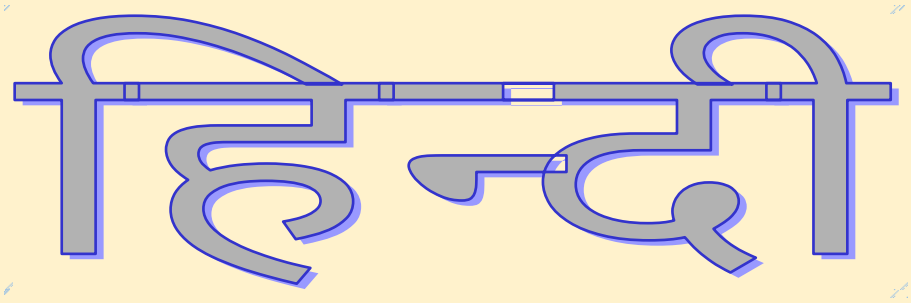

लक्ष्य

संसार में काम करने वाले बहुत हैं। काम को बोझ समझ कर करने वाले और भी अधिक हैं ,परन्तु लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर उसमें एकनिष्ठ होकर काम करने वाले बहुत थोड़े हैं। पर ये थोड़े मनुष्य ही हैं जो संसार को हिला देते हैं। जो अपनी एकाग्रता से जीवन में सफलता प्राप्त करते है। आप अपने लिए जो भी लक्ष्य चुनते हैं , उसमें अपने मन और शरीर की सम्पूर्ण एकाग्रता को केन्द्रित कर लीजिए वह और आप एक हो जाइए, दुनिया को भूल जाइए, केवल लक्ष्य का दर्शन कीजिए और तब उसे बेध लीजिए। संसार आपका है ,जीवन आपका है,सफलता आपकी है।

⇨ अनामिका VII 'ब'

मत मार माँ मुझे

मत मार माँ मुझे

मार मत न!!

अनजाने ही पनप जाने वाला

मादा भ्रूण मात्र नहीं हूँ

मुझमें भी स्पन्दन है जीवन है, धड़कन है

मेरे भीतर की धड़कन को सुन माँ

चीख-चीख कर

जान बख्शने की दुहाई दे रहीं

में वादा करती हूँ

नहीं दुखाऊँगी जी तेरा

गाहे-बगाहे

बटाऊंगी घर के कामों में हाथ तेरा

जब तू मुझे बुलाए

तेरा सारा कहा करके ही

सोचूंगी खुद के लिए।

तेरा सारा कहा करके भी

शायद में कुछ कर सकूं अपने लिए

मै भी बन जाऊं

डॉक्टर इंजीनियर या वकील

चल छोड़ना सृष्टि हूँ मै तो

कुछ न करके भी

एक नयी सृष्टि तो कम से कम हूँ

इसलिए कहती हूँ

मत मार माँ मुझे

मार मत न!!

कहती हूँ

मत मार माँ मुझे

मार मत न!!

(नैन्सी सैनी-VI स)

हमारी "माँ "

मानव हमें बनाया माँ ने,

जीना हमें सिखाया माँ ने

हम गाए उस माँ के सदा गुण

हर कदम सफलता का मार्ग दिखाती ।।

कभी न रुलाती

हमारे गम को खुद का गम समझती

हमारे एक-एक आँसू पर ना जाने कितना रोती।

हमारी सफलता की वजह वो होती।।

भगवान से भी ज्यादा चाहा

वही तो है माँ

जो धरती को जन्नत बनाती ।।

नित जीवन का पाठ सिखाती

हमको हर-दम यही बताती

झूठ न बोलो सच को तोलो

ऐसे तुम ईमानदार इंसान बनो।।

नित जीवन का पाठ सिखाती,

हमको हर-दम यही बताती,

सबके मुंह पर मुस्कान घोलो

ऐसे तुम मृदुभाषी बनो।।

⇨ ईशा चौधरी-सातवीं ब

बेटियाँ

सुकून की अनुभूति, प्यास
अहसास हैं बेटियाँ
सुख हो या दुःख हो हर पल
पास हैं बेटियाँ
है बेटियों से भी रोशन, आज
का नया सवेरा
यकीनन भरोसा रखिए,
कुछ खास हैं बेटियाँ
सुकून की अनुभूति
प्यास का अहसास हैं बेटियाँ
है बेटी तो जिन्दगी के आँगन में किलकारी है
बेटी घर-परिवार और समाज की भागीदारी है।
मनन हैं -चिंतन हैं सच की आवाज़ हैं बेटियाँ
एक सच है यह भी, रस्म है
रिवाज हैं बेटियाँ
सुकून की अनुभूति प्यारा अहसास है बेटियाँ

⇨ ख़ुशी, IX ब

माँ

बाजुओं में खींच के आ जाएगी जैसे कायनात
अपने बच्चे के लिए ऐसे बाहें फैलाती है माँ ...
जिन्दगी के सफर में गर्दिश में धूप में
जब कोई साया नहीं मिलता तब बहुत याद आती है
माँ ....
प्यार कहते हैं किसे और ममता क्या चीज़ है,
कोई उन बच्चों से पूछे जिनकी मर जाती है माँ .....
सफा-ए-हस्ती पे लिखती हैं, असूल ए जिन्दगी,
जब जिगर परदेश जाता है ए नूर-ए-नजर,
कुरान लेकर सर पर आ जाती हैं माँ .....
लेके ज़मानत में रजा-ए-पाक की,
पीछे-पीछे सर झुकाए दूर तक जाती हैं माँ .....
कांपती आवाज़ में कहती है बेटा अलविदा,
सामने जब तक रहें हाथों को लहराती है माँ.....
जब परेशानी में फंस जाती है परदेश में
आँसूओ को पोंछने ख्वाबों में आ जाती हैं माँ .....
मरते दम तक आ सका न बच्चा दूर परदेश से,
अपनी सारी दुआऐ चौखट पर छोड़ जाती हैं माँ.....
बाद मरने, बेटे की खिदमत के लिए,
रूप बेटी का बदल के धर आ जाती हैं माँ .....

⇨ आयशा खान-VII स

तुम मुझको कब तक रोकोगे ?

मुट्ठी में कुछ सपने लेकर, भरकर जेबों में आशाएँ।
दिल में है अरमान यही कुछ कर जाएँ.....कुछ कर जाएँ
सूरज सा तेज नहीं मुझमें, दीपक सा जलता देखोगे...
अपनी हद रोशन करने से, तुम मुझको कब तक रोकोगे.... तुम मुझको कब तक रोकोगे ?
में उस माटी का वृक्ष नहीं जिसको नदियों ने सीन्चा है,
बंजर माटी में पलकर मैंने मृत्यु से जीवन खींचा है ....
मैं पत्थर पर, लिखी इबारत हूँ.....
शीशे से कब तक तोडोगे ?
मिटने वाला में नाम नहीं ....तुम मुझको कब तक रोकोगे ?
इस जग में जितने जुल्म नहीं उतने सहने की ताकत है ...
तानों के भी शोर में रहकर सच कहने की आदत है ।।
में सागर से भी गहरा हूँ।
तुम कितने कंकड फेंकोगे ? चुन-चुन कर आगे बढूँगा मैं ...
तुम मुझको कब तक रोकोगे, कब तक रोकोगे,
झुक-झुक सीधा खड़ा हुआ, अब फिर झुकने का शौक नहीं....
अपने ही हाथों रचा स्वयं....
तुमसे मिटने का खौफ नहीं।
तुम हालातों की भट्टी में जब-जब भी मुझको झोंकोगे ।
तब तपकर सोना बनूँगा मैं ...
तुम मुझको कब तक रोकोगे ....तुम मुझको कब तक रोकोगे ?

⇨ प्रतिभा-XI कला

वो आतंकवादी है

ना किसी मजहब के हैं वो ना मानवतावादी हैं।
दहशत है ईमान जिनका वो सिर्फ आतंकवादी हैं ।
गीता के दुश्मन हैं वो दुश्मन है कुरान के।
खूनी दरिन्दे हैं वो दुश्मन हैं इंसान के।
अमन चैन के घोर दुश्मन हैं वो परम हिंसावादी हैं ।
दहशत है ईमान जिनका वो सिर्फ आतंकवादी हैं ।
आतंक से दुनिया सहमी-सहमी है।
खौफ से हर आँख में छाई नमी है।
अखण्ड विश्व को खंडित करें वो विभाजनवादी हैं ।
दहशत है ईमान जिनका वो सिर्फ आतंकवादी हैं ।
धार्मिक कट्टरता को सहिष्णुता से तोड़ना होगा।
आतंकवादियों को मुख्य धारा से जोड़ना होगा।
जड़ से मिटे आतंक तभी
खुशहाल हर घाटी वादी है।
दहशत है ईमान जिनका वो सिर्फ आतंकवादी हैं।

⇨ रक्षिता VIII-स

बच्चो, झूठ कभी मत बोलो

बच्चो, झूठ कभी मत बोलो

बच्चो, झूठ कभी मत बोलो।

डटे रहो तुम सच्चाई पर,

अड़े रहो हर अच्छाई पर।

चाहे अपना सिर कट जाए ,

कदम न पर पीछे हट जाए

सत्य कहो जब भी मुख खोलो ,

बच्चो, झूठ कभी मत बोलो।

कभी नही छिपती सच्चाई ,

कितनी भी दो कहीं सफाई ।

यदि चाहो रहना तुम सुख से ,

पहले अपने मन पर तौलो ,

बच्चो , झूठ कभी मत बोलो ।

जीवन में सम्मान समलेगा ,

मनचाहा वरदान समलेगा ।

तुमको दुनिया प्यार करेगी,

आदर और सत्कार करेगी ।

सत्य - सुधा वचनों में घोलो ,

बच्चो, झूठ कभी मत बोलो।

⇨ मेघना कक्षा -VI A

अभिमान क्यो ?

कई बार किसी की जुबान कहना तो बहुत चाहती है

बेशक वह दबाव के आगे चाहकर भी न कुछ कह पाती है

उसे हकीकत में मालूम तो बहुत कुछ होता है

पर सच्चाई के विरुद्ध उठती अवाज से डरती है

गलतियों पर डाल पर्दा कौशल अक्सर सदखाते है

कहाँ छुपा पाओगे उसे जो दरारो से भी दिख सकता है

आखिर कब तक कोई बहानों का पेड़ बना सकता है

सर्वोच्च अदालत में बिन खुली फाइले भी जरूर खुलती है

ओहदे और पद का कोई इतना अभिमान क्यों पालता है

आम हो या खास गति तो सबकी एक जैसी ही होती है।

खुशी सैन कक्षा- VII C

नारी

नारी तेरे रूप हजार,

कहीं पर है गुस्सा, कहीं पर है प्यार।

धरती पर तू रूप ईश्वर का, माँ जब तू कहलाती है।

कभी बनकर बेटी, तू आँगन में इठलाती है।

कभी बनकर दुर्गा, शत्रु पर करती है प्रहार ,

नारी तेरे रूप हजार।

कहीं पर गुस्सा, कहीं पर प्यार।

कभी बनकर पत्नी हर फर्ज अपना निभाती है,

कभी बहन बनकर भाई की कलाई सजाती है।

खिजा के मौसम में भी ले आती है बहार,

नारी तेरे रुप हजार।

कहीं पर गुस्सा, कहीं पर प्यार।

अपने हर रूप में नारी तू कितनी महान बनी,

कभी सीता, कभी पन्ना, कभी रानी झाँसी-सी, कभी

रजिया सुल्तान बनी

तप्त मौसम में तू है, सुख की शीतल बयार,

नारी तेरे रूप हजार।

कहीं पर गुस्सा, कहीं पर प्यार।

अब ना जीवन हरने देंगे, कोख में ना तुझको मरने

देंगे।

लेती हैं ये शपथ हम भारत माँ की बेटी,

बुराई के हर दानव की अब होगी हार,

नारी तेरे रूप हजार।

कहीं पर गुस्सा, कहीं पर प्यार।

(भरिंसी रूलाभनया कक्षा -VII C)

माँ

प्यारी जग से न्यारी माँ

खुशियाँ देती सारी माँ।

चलना हमें सिखाती माँ, मंजिल हमें दिखाती माँ।

सबसे मीठा बोले माँ दुनिया में अनमोल है माँ।

खाना हमें खिलाती है माँ।

लोरी गाकर सुनाती है माँ।

प्यारी जग से न्यारी माँ।

खुशियाँ देती सारी माँ।

(दीपिका कल्याण कक्षा -VII ब)

आँसू और मुस्कान

हमने आँसुओ को कहा,

यूँ भरी महफिल में आकर मेरा मजाक ना बनाया करो,

लोगों के बीच आकर इज्जत कम ना किया करो।

आंसुओं ने कहा इतने लोगों के बीच भी अपने आपको तन्हा पाता हूँ,

बस इसलिए साथ निभाने चला आता हूँ।

उलझी है इंसान की जिन्दगी इस तरह की,

आंसुओं को तमीज चाहिए और मुस्कराहट को वजह।

हम भी कभी मुस्कराते थे बपेरवाह अंदाज में,

देखा है आज खुद को कुछ पुरानी तस्वीरो में।

जिन्दगी ने सिखाना चाहा हमको पर हम ना सीख पाए

हम तो बड़े हो गए पर 'फरेब' दिल बच्चा ही रह गया।

उलझे हैं हम इतने अपनी जिन्दगी में, कि मुस्कराना ही भूल गए हैं

आओ मिलकर मुसकराने की वजह ढूंढें

तुम हमें ढूंढो . . . . . हम तुम्हें ढूंढें।

⇨ आरती कक्षा -VIII A

पर्यावरण

ये वृक्ष धरा के अच्छे हैं,

कातिल मानव हत्यारों से।

नहीं बहाते हैं ये आँसू ,

निष्ठुर जग के प्रहारों से ।।

निज स्वार्थ भाव से दूर रहें,

धरती को शीतल छाया देते।

अपनापन उनका देखों तुम,

खाने को मीठे फल देते ।।

कितनी शीतलता है इनकी,

माँ के आँचल सी छाँव में।

हरी-भरी हरियाली है,

खुशहाली है मेरे गाँव में ।।

हरित क्रांति को लाने में,

सबको अब आगे आना हैं।

पर्यावरण को दूषित न करके,

हमको यह वचन निभाना है ।।

⇨ युक्ता राठौड़-नवीं 'अ'

परीक्षा

परीक्षा आए टेंशन लाए हमारी खुशियों को ले जाए

रात दिन मेहनत करवाए हाय ।

जब भी यह परीक्षा आए ।

रात को नींद उडा ले जाए ।

दिन को नींद बहुत सताए,

खेल - कूद बंद हो जाए,

जरा सा तरस न हम पर खाए

अंग्रेजी हमें समझ न आए

इतिहास तो हमारा भेजा खाए

गणित तो हमें रुला ही जाए, हाय।

जब भी यह परीक्षा आए

भूगोल में सिर गोल घूम जाए,

परीक्षा में जब नंबर कम आए

माता–पिता से मार खाए

टीचर भी ताना सुनाए,

जरा-सा तरस न हम पर खाए, हाय। जब भी यह

परीक्षा आए।

⇨ दीक्षा यादव कक्षा-VII B

जंगल

'एक जंगल है ।'

' अच्छा। '

'जंगल में ऊँची-ऊँची बिल्डिंग है। '

'जंगल में चौड़ी सड़कें हैं । '

' ये क्या गप सुना रहे हो भाई ? '

' जंगल में बहुत सारी गाड़ियाँ इधर

-उधर दौड़ती हैं । '

' अब रहने दो भाई , कुछ भी बोले

जा रहे हो । '

' जहां आप खड़े हैं, ये क्या है ? '

' नया शहर । '

' पहले यहाँ क्या था ? '

' जंगल '

' तो फिर !!!'

⇨ नवीना– 9(अ)

कुत्ते से भेंट

कल की बात है , बात क्या खासी मुलाकात है ,

रात के बारह बज रहे थे, सभी गहन निद्रा में सो रहे थे।

अचानक कुत्ते के भौकनें की आवाज आई ,

मैनें तुरंत उठकर मोमबत्ती जलाई।

जब दरवाजा खोलकर बाहर आया,

सामने एक जवाब कुत्ता नजर आया।

मैनें कहा, " यार इतनी रात हो गई ,

सारी दुनिया सो गई ,

मगर तुमने क्या भौं-भौं मचा रखी है।"

कुत्ता सीधा खड़ा हो गया ,

उसकी दुम का हिलना तक बंद हो गया।

बोला, " भाई साहब। आप जाइए और सो जाइए।

आदमी से बात करने में मेरी जबान तक लजाती है ,

दुम का हिलना तक बंद हो जाता है।

जब हम भौकते हैं तो सैकड़ों कुत्ते हमारी आवाज के साथ भौंकते हैं।

अपनी जातीय अस्मिता का सामान्य-सा परिचय देते हैं।

दुख-दर्द में एक दूसरे के पास जाते हैं , दुम हिलाते हैं।

इंसान क्या इंसान , जो एक दूसरे को कमजोर समझ खा जाते हैं।

आज तक हम मानव की दया पर पलते थे

आज इंसान हमारी वफादारी पर पलता है।

मात्र हम है कि मुसीबत आने पर जान पर खेल जाते है,

इंसान के तो जो अपने हैं , वे भी दुम दबाकर भाग जाते हैं।

मरते दम तक साथ देनेवाला मैं ही एक नाचीज प्राणी हूँ।

आज इंसान की जाति से मुझे घृणा हो गई है,

इसलिए स्वाभिमानी कुत्तों की, एक अलग बस्ती ही बस गई है।

सच बताऊँ - मैं इंसान की आवाज से भी लजाने लगा हूँ ,

उसका मुखड़ा देखकर शरमाने लगा हूँ, क्योंकि आज

मैं उसकी-दया पर नहीं ,

वो हमारी कृपा पर पल रहे हैं ,

हमारे अनके साथी, अनेक रूपों में उसकी मदद कर रहे हैं।

कोई पुलिस के रूप में , कोई प्रहरी के रूप में ,

कोई रक्षक के रूप में तो कोई संरक्षक के रूप में ।

आज मानव खूंखार भेडिया हो गया है ,

उसके दाँतों में उसका ही खून लग गया है ।

वह दबे पाँव आता है ,

इंसान को भेड़ समझ खा जाता है । ”

मैं कुत्ते की बात ज्यादा देर न सुन सका और कहा -

“क्या बक-बक लगाए हो

क्या मानवता के सामने प्रश्नचिह्न बनकर आए हो।”

कुत्ता चला गया ,

मैं बिस्तर पर जाकर लेट गया ,

परंतु नींद न आई ,

इंसान की करामात पर गहरी लज्जा आई ।

सोचा कि क्या इंसान आज इतना गिर गया है कि

कुत्ता तक उससे नफरत करने लगा है ।

⇨ प्रीति(9 अ)

हिन्दी को नमन

आओ-आओ सुनो कहानी हिन्दी के उत्थान की

हिन्दी की जय बोलो हिन्दी बिन्दी हिन्दुस्तान की

हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।

हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।।

सबकी भाषा अलग-अलग है अलग -अलग विस्तार है

भांवों की सीमा के भीतर अलग अलग संसार है

सब भाषाओं के फूलों का इक सलोना हार है

अलग-अलग वीणा है लेकिन एक मधुर झंकार है

भाषाओं में ज्योति जली है कवियों के बलिदान की

हिन्दी जी जय बोलों हिन्दी भाषा हिन्दुस्तान की

हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।

हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।।

हिन्दी की गौरव गाथा का नया निराला ढंग है

कहीं वीरता, कहीं भक्ति है, कहीं प्रेम का रंग है

कहीं खनकती हैं तलवारें बजता कहीं मृदंग है

कहीं प्रेम की रसधारा में डूबा सारा अंग है

वीर भक्ति रस की ये गंगा, यमुना है कल्याण की

हिन्दी की जय बोलो हिन्दी बिन्दी हिन्दुस्तान की

हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।

हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।।

सुनो चंद की हुंकारों को , जगनिक की ललकार को

सूरदास की गुंजारों को , तुसली की मनुहार को

आडम्बर पर संत कबीरा की चुभती फटकार को

गिरिधर की दासी मीरा की भाव भरी रसधार को

भाषाओं में ज्योति जली है कवियों के बलिदान की

हिन्दी की जय बोलो हिन्दी भाषा हिन्दुस्तान की

हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।

हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।।

भारतेंदु ने पौधा लगाया महावीर ने मान दिया

अगर गुप्त ने विकसाया तो जयशंकर ने सम्मान दिया

पंत निराला ने झंडे को मजबूती से थाम लिया
और महादेवी ने इसके सौरभ को महका दिया
हिन्दी की ये काव्य कथा है हिन्दी के गुणगान की
हिन्दी की जय बोलो हिन्दी बिन्दी हिन्दुस्तान की
हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।
हिन्दी को नमन, हिन्दी को नमन ।।

⇨ हेरम्ब-आठवीं 'स'

कड़वा सत्य

कहते हैं सब हमें तो बेटा चाहिए ,
आगे बढ़ा सके जो वंश हमारा ।
होकर बड़ा, बनकर आदमी बढ़ा ,
जो करे नाम रोषन हमारा ।
बुढापे का सहारा है वो हमारा ,
तारा है आँखों का वो हमारा ।
रखते हैं अब खयाल उसका हम,
आगे रखेगा वो हमारा ।
चलना सिखाया , बोलना सिखाया ।
पढ़ाया -लिखाया , कर दी हर ख्वाहिश उसकी पूरी ।
घंटों बैठकर करते थे बातें उस से,
ताकि समझ सके उसे अच्छे से ।
नौकरी की , शादी की ,
बन गया आदमी बड़ा वो ।
धन के मोह में , दुनिया की बातों में ,
भुला सब कुछ वो ।
माँ की ममता , पिता का साया ,
कुछ नहीं है आज उसके लिए ।
तरस जाते है माँ-बाप , उस से बातें करने को ,
पर फुरसत नहीं उसे , माँ-बाप का हाल पूछने को ।
आज रहते है घर के किसी एक कोने में ,
ना वो बात करता, ना वो पूछता हाल ।
तरस जाते हैं माँ -बाप , सुनने को उसकी आवाज ।
बोलना सिखाया जिन माँ -बाप ने ,
आज सिखा रहा है उनको वो चुप रहना ।
जिसे कहते थे आँखों का तारा वो ,
आज उनको अंधियारें में रखता है वो ।
खिलाते थे वो जिसको, खाना अपने हाथो से ,
उसे मतलब नहीं आज ,
ये पूछने को , कि खाना खाया या नहीं ।
जो कहते थे , वो सहारा है हमारे बुढापें का ,
उसको मतलब नहीं आज उन माँ -बाप से ।
जिसको दुनिया की इज्जत करना सिखाया ,
आज भूल गया वो माँ -बाप की इज्जत करना ।
करते थे हर त्याग उसके लिए ,
कभी न छोड़ों मुसीबत में उसको अकेला ।

हर मुसीबत में देते थे साथ उसका ,

समझता है आज वो मुसीबत माँ-बाप को अपने लिए।

दुनिया से वो मुक्ति मिल गई उन माँ-बाप को,

पर फिर भी तरसते है बेटे के प्यार को ।

" नहीं है पता उसको मोल माँ -बाप का ,

जिनकी कदर नहीं की उसने कभी ।

जाकर पूछो उन अनाथ बच्चों से ,

क्या मोल होता है माँ-बाप का ,

जो तरस जाते है माँ-बाप के प्यार को ।

⇨ निधि शर्मा ,कक्षा नवी -:'अ'

बेटी

जब-जब जन्म लेती है बेटी ,

खुशियां साथ लाती है बेटी ।

ईश्वर की सौगात है बेटी,

सुबह की पहली किरण है बेटी।

तारों की शीतल छाया है बेटी ,

आंगन की चिड़िया है बेटी ।

त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,

नये-नये रिश्ते बनाती है बेटी ।

जिस घर जाए , उजाला लाती है बेटी ,

बार-बार याद आती है बेटी ।

बेटी की कीमत उनसे पूछो ,

जिनके पास नहीं है बेटी ।

⇨ यशस्वी 8 ,अ

इलेक्ट्रॉनों की दुनिया, शैतानों की हिस्ट्री

नाम जिसे हमने दिया है केमिस्ट्री
सुनो मै सुनाती हूँ इसकी कहानी,
प्रोटॉन है नाना, न्यूट्रॉन है मामा
अल्फा और बीटा के गामा है मामा
पहनते है कुर्ता और पजामा
जल और मिश्रण और क्षार
केमिस्ट्री के शैतान है चार
तेरे कारण इस दुनिया में फैल गया गम ही गम
चाहे तेरी बेवफाई का गम हो परमाणु बम
रात रात भर रटते रह जाते
फिर तुमसे ही धोखा खाते
कोई समझ न पाये यह तेरी मिस्ट्री
चाहे रदरफोर्ड हो या मैडम क्यूरी
तुझ में है केवल मिस्ट्री ही मिस्ट्री
इसलिए तो हम कहते हैं शैतान की हिस्ट्री

नारी तेरे कितने रूप

नारी तेरे कितने रूप
जाड़े में हो गरमी की धूप
नारी तेरे कितने रूप
कभी तू माता बन जाती हैं
ममता सब पर बरसाती हैं
कभी तू देवी दुर्गा बनकर
असुरों का नाश कर जाती हैं।
कभी भाइयों की बहन बन कर
स्नेह करना तू सिखलाती हैं
कभी झाँसी की रानी बन कर
मर मिटना तू सिखलाती हैं
कभी स्त्री का प्यार हैं तुझ में
और कभी चंडी का रूप
नारी तेरे कितने रूप
मत समझो निर्बल नारी को
बुझी हुई इस चिंगारी को
भड़क जाए तो कर सकती है
इस संसार का विनाश

⇨ पायल ,कक्षा - 7 ब

सुप्रभात

आओ हम अच्छे काम करें, दुनिया में अपना नाम करें

माता-पिता बुजुर्गों की सेवा सम्मान करें, उनकी

अच्छी संतान बने

माँ बहनों के रक्षक बनें, उनका सम्मान करें

नियोजित परिवार सुख का आधार, घर-घर इसका

प्रचार करें

शिक्षित समाज सभ्य सम्माज, शिक्षा का प्रसार करें

जरूरतमंद के मददगार बनें, बीमार का उपचार करें

भूखे पेट न सोये कोई, हम ऐसे इंतजाम करें

ना क्रोध करें ना किसी से डरें, ना जुल्म करें ना जुल्म

सहें

युवाओं को रोजगार मिलें, हम ऐसे कुछ करें

ना जात पात ना छुआछूत , सब धर्मों का सम्मान करें

अच्छी सोच अच्छे विचार, अच्छे समाज का निर्माण

करें

निराश ना हो हताश ना हो

नई ऊर्जा का संचार करें

सुनहरा कल इंतज़ार में है

खाली ना बैठे कुछ काम करें

सपनों में रख आस्था

सपनों में रख आस्था कार्य तू किये जा,

त्याग से ना डर आलम परित्याग किये जा

गलती कर ना घबरा,

गिर कर फिर हो जा खड़ा

समस्याओं को रास्तों से निकाल दे,

चट्टान भी हो तो ठोकर से उछाल दे

रख हिम्मत तूफ़ानों से टकराने की

जरूरत नहीं है किसी मुसीबत से घबराने की

जो पाना है उसकी एक पागल की तरह चाहत कर

करता रह कर्म मगर साथ में खुदा की इबाबत भी कर

फिर देख किस्मत क्या क्या रंग दिखलायेगी,

तुझको तेरी मंजिल मिल जाएगी, मंजिल मिल

जाएगी

मैदान में हारा इंसान

फिर से जीत सकता है

मन से हारा इंसान कभी नहीं जीत सकता

मंजिल उनको मिलती है

जिनके सपनों में जान होती है

सिर्फ पंखों से कुछ नहीं होता दोस्तों

हौसलों से उड़ान होती है

⇨ पूजा ,कक्षा - 9 अ

मैं औरत हूँ

दिलों में बस जाए वो मोहब्बत हूँ ,
कभी बहिन , कभी ममता की मूरत हूँ।
मेरे आँचल में है चाँद सितारे ,
माँ के कदमों में बसी एक जन्नत हूँ।
हर दर्द -ओ गम को छुपा लिया सीने में ,
लब पे न आये वो हसरत हूँ।
मेरे होने से है कायनात जवान ,
ज़िन्दगी की बेहद हंसी हकीकत हूँ।
हर रूप में ढल कर संवर जाऊं ,
सब्र में ढल कर, हर रिश्ते की ताकत हूँ।
अपने हौंसले से तकदीर को बदल दूँ ,
सुन लो ऐ दुनिया , हाँ मै औरत हूँ।

⇨ यशस्वी, VIII ब

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर-सा सध ,
मरुस्थल में भी जल निकलेगा॥
मेहनत कर , पौधों को पानी दे,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा , हिम्मत को आग दे ,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिन्दा रख , दिल में उम्मीदों को ,
गरल के समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की ,
जो है आज थमा थमा सा , चल निकलेगा॥

⇨ कोमल चौधरी ,कक्षा IX :अ

महाकवि कालिदास

कालिदास संस्कृत भाषा के महान , कवि और नाटककार थे । उन्होनें भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएँ की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्व निरूपित है । कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते है ।

अभिज्ञान शाकुन्तलम् कालिदास की सबसे प्रसिद्व रचना है । यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था । यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है । मेघदूतम् कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिससे कवि की कल्पना शक्ति और भावाभिव्यक्ति का अद्भूत रूप इस छोटे से खण्डकाव्य में दिखता है ।

कालिदास वैदर्भी रीति के कवि थे और तदनुरूप वे अपनी अलंकार युक्त किंतु सरल और मधुर भाषा के लिए विशेष रूप से अपनी उपमाओं के लिए जाने जाते हैं । साहित्य में औदार्य गुण के प्रति कालिदास का विशेष प्रेम है और उन्होनें अपने श्रृंगार रस प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परम्पराओं और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है ।

कालिदास के जन्मस्थान के बारे में विवाद है । मेघदूतम् में उज्जैन के प्रति उनके विशेष प्रेम को देखते हुए कुछ लोग उन्हें उज्जैन का निवासी मानते हैं ।

साहित्यकारों ने ये सिद्व करने का प्रयास किया है कि कालिदास का जन्म उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग जिले के कविल्ठा गाँव में हुआ था । कालिदास ने यहीं अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की थी और यहीं पर उन्होनें मेघदूत कुमार संभव और रघुवंष जैसे महाकाव्यों की रचना की थी ।

कालिदास की शादी के बाद विद्योत्तमा को सच्चाई का पता चला कि कालिदास अनपढ है तो उसने कालिदास को धिक्कारा और यह कहकर निकाल दिया कि सच्चे पंडित बने बिना घर वापस मत आना । कालिदास ने सच्चे मन से काली देवी की अराधना की और उनके आशीर्वाद से वे ज्ञानी और धनवान बन गए । ज्ञान की प्राप्ति के बाद जब वे घर लौटे तो उन्होनें दरवाजा खड़काकर कहा-कपाटम् उद्घाटय सुंदरी (दरवाजा खोलों सुंदरी)। विद्योत्तमा ने चकित होकर कहा - अस्ति कश्चित् वाग्विशेषज्ञ: (कोई विद्वान लगता है) कालिदास ने विद्योत्तमा को अपना पथ प्रदर्शक गुरू माना और उसके इस वाक्य को उन्होनें अपने काव्यों में जगह दी ।

कालिदास ने लगभग चालीस रचनाएँ की थी जिन्हें अलग-अलग विद्वानों ने कालिदास द्वारा रचित सिद्व करने का प्रयास किया है । इनमें से सात ही ऐसे है जो निर्विवाद रूप से कालिदासकृत मानी जाती है । तीन नाटक

अभिज्ञान शाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम् और मालविकाग्निमित्रम्, दो खण्डकाव्यः मेघदूतम् और ऋतुसंहार । ऐसे महान कवि को शत् शत् नमन ।

⇨ अनिषा शर्मा-दसवी ' अ '

प्रसिद्ध महापुरुष एवम् उनके विख्यात उपनाम

महापुरुष	उपनाम
1. आदि कवि	1. वाल्मीकि
2. हिंदी के प्रथम कवि	2. सरहपा
3. प्रथम सूफी संत	3. असाइत
4. वात्सल्य रस सम्राट	4. सूरदास
5. कठिन काव्य का प्रेत	5. केशवदास
6. कवि सम्राट	6. अयोध्या सिंह उपाध्याय
7. राष्ट्र कवि	7. मैथिलीशरण गुप्त
8. कवियों के कवि	8. शमशेर बहादुर सिंह
9. मैथिल कोकिल	9. विद्यापति
10. हिंदुस्तान की तूति	10. अमीर खुसरो
11. अष्टछाप का जहाज	11. सूरदास
12. आधुनिक मीरा	12. महादेवी वर्मा
13. एक भारतीय आत्मा	13. माखन लाल चतुर्वेदी
14. रसवादी आलोचक	14. नगेन्द्र

⇨ प्रीति अ IX ,

विचार

१. अगर आप किसी की खुशियाँ लिखने वाली पेन्सिल नहीं बन सकते है तो एक अच्छा-सा इरेज़र बनिए जो उनका दुःख मिटा सके।

२. खुद का *Best version* बनो , किसी और की *copy* नही।

३. हर व्यक्ति मुझसे किसी न किसी बात में बेहतर होता है और मैं उसी से वह बात सीख लेता हूँ।

⇨ कोमल चौधरी IX : कक्षा ,अ

सार्थक

कोई काम नामुमकिन नहीं
अगर इरादे फौलाद हों
परिश्रम में रिसा हो खून–पसीना।
सुस्त कमरे में बंद
मौसम का रोना रोते रहें
उससे क्या हासिल।
जाहिर है ताजी हवा के लिए
हाथ उठाकर पड़ेगा
खिड़की को खोलना।
जो दरिया की लहरों को
अनजाने खौफ से गिनती भर जाएँ
वे भला कैसे पहुचेंगे किनारे तक
मंजिल पहुँचने के लिए
तयशुदा है
हिम्मत बांधना और कदम उठाकर
दरिया में कूद पड़ना।
यह अवश्य है कि
अँधेरे की गिरफ्त में है
इस समय बहुत सारा हिस्सा
लेकिन याद रहे
एक किरण काफी है
कितना भी घटाटोप हो
अँधेरे का फाड़ने सीना।
यूँ जीने को तो सभी जी लेते हैं
जिसने पाया है जीवन
पशु–पक्षी, कीट-पतंगे भी
लेकिन सार्थक वही है सिर्फ
जो काम आए दूसरों के जीवन।

⇨ युक्ता राठौड़'अIX ' ,

मेरे निशान है कहाँ

मैं तो नहीं हूँ मैं, बिकता हूँ मैं तो दुकानों में |
दुनिया बनाई मैंने हाथों से, मिट्टी से नहीं जज्बातों से|
फिर रहा हूँ ढूंढता मेरे निशानों को कहाँ,
तेरा ही साया बनके तेरे साथ चला मैं,
मेरे निशान है कहाँ .....
जब धूप आई सर पे छाँव बना मैं, छाओं में तेरी राहों में
फिर भी तू उजालों में ढूंढे सवालों को, जज्बों में खोया हुआ है तू|
मुझसे बनी है पक्षी बहता पानी ले जमी से, आसमां तक मेरी कहानी |
तू भी मुझसे बना, बाँटे मुझे यूँ क्यूँ|
यहाँ मेरी बनाई तकदीरें है, रंगों भरी ये तस्वीरें है|
फिर भी क्यूँ यह बेजुबा हैं, मेरे निशान है कहाँ
.....

⇨ पलक खीचड़पांच -कक्षा ,वीं-'स'

तितली और कली

हरी डाल पर लगी हुई थी,
नन्ही सुंदर एक कली
तितली उससे आकर बोली,
तुम लगती हो बड़ी भली|
अब जागो तुम आँखे खोलो,
और हमारे संग खेलो|
फैले सुंदर महक तुम्हारी,
महके सारी गली गली|
कली छिटककर खिली रंगीली,
तुरंत खेल की सुनकर बात|
साथ हवा के लगी भागने,
तितली छूने उसे चली|

⇨ कंचन ,कक्षापांच-वीं- अ

धूप

सुबह सवेरे सोन परी-सी
सब की छत पर आती धूप
अपनी झोली से किरणों के
मोती खूब लुटाती धूप|
गाँव-गाँव और गली-गली में
फूल-फूल और कली-कली में
ओढ़ चुनरिया रंग बिरंगी
मंद-मंद मुस्काती धूप |
झाड़ी-झुरमुट नदी रेत में
कड़ी फ़सल खलिहान खेत में
बाग-बगीचे ताल-तलैया
दूर-दूर तक जाती धूप |
घिरें मस्त बादल कजरारे
नभ में फिरते पाँव पसारे
लुका-छिपी कि खेल खेलती
बदल में छुप जाती धूप |

मत पूछो बन्दर का हाल

डम-डम डमरू फेंकें जाल,
मत पूछो बन्दर का हाल |
लाठी ले जत ससुराल,
पीला कुरता टोपी लाल |
दुल्हे-सी मतवाली चल,
किया बंदरिया ने जंजाल |
बन्दर ने कर दिया बवाल,
दुल्हन पीट करी बेहाल |

⇨ हर्षिता मीणा ,कक्षा – पांचवीं'अ'

मॉनीटर

जो क्लास में बने मॉनीटर,
कोरी शान जताता है,
आता-जाता कुछ भी नहीं
हम पर रोब जमाता है |
जब क्लास में टीचर नहीं
तो खुद टीचर बन जाता है|
कॉपी, पेन्सिल लेकर,
बस नाम लिखने लग जाता है |
खुद तो हमेशा बाते करते
हमें चुप करवाता है
अपनी तो बस गलती माफ़,
हमें बलि चढ़ाता है |
क्लास वो सम्भाल पाता नहीं,
बस चीखता और चिल्लाता है,
भगवान बचाये हमें इस मॉनीटर से
इसे कोई नहीं चाहता है|

⇨ कनिष्का चौधरी ,कक्षा – पांचवीं'अ'

साबुन

साबुन गई आँख में
पानी गया कान में
छीकें आई नाक से
आंसू टपके आँख से
मम्मी आई दौड़ के
सारे काम छोड़ के
गले लगाये लाड से
काम करो तुम ध्यान से
प्यारे हो तुम जान से

⇨ निधि ,कक्षा – पांचवीं 'अ'

कर्ज चुकाना हैं

जन्म लिया है,जिस माटी में
उसका कर्ज चुकाना हैं |
हरियाली की रक्षा कर के,
बहारों का खिलाना हैं |
पौधे लगाकर वृक्ष बचाकर ,
धरती की उम्र बढ़ाना हैं|
वन प्राणी की रक्षा कर के,
जीवन सुखद बनाना हैं|
फल-फूलों के बाग़ लगाकर ,
जन तंदुरुस्त बनाना हैं|
जीने और जीने देने का,
ये सिलसिला चलाना हैं|
जग में जन्मे स्वार्थ भाव को ,
जन-जन से दूर भगाना हैं|
जीव जीव से प्रेम भाव को,
हमको सबको सिखाना हैं|
बच्चों के कोमल भावों को,
रक्षक हमको बनाना हैं|
धर्म जाति के भेदभाव से
बच्चों को परे हटाना हैं|
बंधुभाव और मानवता का ,
गाढ़ा रंग चढ़ाना हैं|
जीने और जीने देने का,
सब को पाठ पढ़ना हैं|
जल वायु और आवाज को ,
प्रदूषण से दूर भगाना हैं|
ईश्वर का और मानव का ,
हमको कर्ज चुकाना हैं|
मात-पिता और धरा का ,
हमको कर्ज चुकाना हैं|

⇨ प्रियंका

जमाने का चलन

हर दिशा में लम्हा लम्हा बो गया है,
कह के बहम से अलविदा वह जो गया है
कर लिये सूरज से समझौते घटा ने
उजली सुबह का तो वादा सो गया है
इस शहर में खुशनुमा है आज मौसम
यह समां रंगीन, लेकिन खो गया है
था किनारे का हंसीं मंजर छलावा
गम के सागर में डूबा हमको गया है
दुश्मनों से प्यार, नफरत से दोस्तों से
ज़माने का चलन क्या हो गया है

⇨ रोजी खान, कक्षा -ग्यारहवीं 'विज्ञान'

करूण पुकार

जिस पर अपना जीवन वारा ,
जो था अनुपम सबसे न्यारा ,
जिसको समझा एक सहारा ,
उसने पकड़ा अन्य किनारा ,
टूट रहा है स्वप्न सुनहरा| |
नव प्रभात की नई किरण सी,
ज्योति वह मेरे जीवन की ,
हर पल, हर क्षण उसे सँवारा ,
फिर क्यों उसको लगा न प्यारा ,
टूट रहा है स्वप्न सुनहरा|
आशा थी उसको पाने की,
थी उम्मीद उसके आने की,
टूट चला अब वो सहारा,
जीवन को अब दु;ख ही गवारा,
टूट रहा है स्वप्न सुनहरा|
चाँद बिना सूना आकाश,
पूनम भी है बिना प्रकाश,
संकट में घिर तुझे पुकारा,
काटो भव बंधन का फेरा ,
टूट रहा है स्वप्न सुनहरा|

⇨ रजनीश कुमार ,कक्षा -ग्यारहवीं 'विज्ञान'

केंद्रीय विद्यालय अनूठा और निराला

केंद्रीय विद्यालय अनूठा और निराला
शिक्षा प्रदान करने की मिसाल है
अध्यापक यहाँ के कमाल हैं
बच्चे अनुशासन में रहते सभी
गलत काम ना करते कभी
विद्यालय परिसर है अजब
प्रार्थना सभा होती है गजब
पढाई–लिखाई में न कम
खेल–कूद में भी आगे हैं हम
शिक्षकों का करते हैं आदर सभी
कक्षा में मचाते हैं धमाल कभी-कभी
पुस्तकालय यहाँ का निराला है
अनमोल पुस्तकों का खजाना है
अध्यापक ऐसे ना देखोगे कभी
ज्ञान का भंडार है सभी के सभी
भेद भाव ना करते कभी
आपसी सौहार्द्र से रहते सभी
विद्यालय मेरा न्यारा है
दुनियां में सबसे प्यारा है |

⇨ लक्षिता ,सातवीं 'अ'

शायरी

चूमा था वीरों ने
फंसी का फंदा
यूँ ही नहीं मिली थी,
आजादी खैरात में|
दिलों की नफ़रत को निकालो
वतन के इन दुश्मनों को मारो
ये देश है खतरे में ए-मेरे-वतन
भारत माँ के सम्मान को बचा लो
मैं मुल्क की हिफाज़त करूँगा
ये मुल्क मेरी जान है
इसकी रक्षा के लिये मेरे
दिल और जाँ कुर्बान है|
शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मर मिटने वालों का बाकी यही निशां होगा
हमारी पहचान तो सिर्फ ये है कि हम
भारतीय हैं-जय भारत, वन्दे मातरम्

⇨ निहारिका चौधरी सातवीं ,
'स'

माँ

घुटनों से रेंगते-रेंगते
कब पैरों पर खड़ा हुआ
तेरे आँचल की छाया में
न जाने कब मैं बड़ा हुआ
काला टीका दूध-मलाई
अब भी सब कुछ वैसा है
मैं ही मैं हूँ हर जगह
प्यार ये तेरा कैसा है
सीधा-साधा भोला-भाला
मैं ही सबसे सच्चा हूँ
कितना भी मैं बड़ा हो जाऊं
मैं तेरा बच्चा हूँ

⇨ कुमकुम मीलकक्षा ,–छठी
'ब'

तुम मुझे कब तक रोकोगे ?

मुठ्ठी में कुछ सपने लेकर, भरकर जेबों में आशाएं |
दिल में है अरमान यही, कुछ कर जाएँ कुछ कर जाएँ|
सूरज-सा तेज भले नहीं मुझमें, पर दीपक-सा जलता देखोगे ...
अपनी हद रोशन करने से, तुम मुझे कब तक रोकोगे?
मैं उस माटी का वृक्ष नहीं , जिसको नदियों ने सींचा है|
बंजर माटी में पलकर मैनें मेहनत से जीवन सींचा हैं|
मैं पत्थर पर लिखी इबारत हूँ शीशे से कब तक तोड़ोगें |
मिटने वालो में नाम नहीं,तुम मुझे कब तक रोकोगे?
भूमि से सीधा खड़ा हुआ, अब फिर झुकाने का खौफ नहीं |
तुम हालातों की भट्टी में, जब जब भी मुझकों झौकोगें |
तब तपकर सोना बनूंगा मैं , तुम मुझे कब तक रोकोगे?

⇨ रिजवाना बानो-कक्षा , (विज्ञान) ग्यारहवीं

पाठशाला के दिन

ना जाने हम कब बड़े हो गए?
स्कूल के दिन न जाने कहाँ खो गये
दोस्तों की बातें जब भी याद आती है
आँखों में नमी-सी छा जाती है
वो दोस्तों की गपशप,वो दोस्तों से लड़ना
टीचर के डांटने पर,छुप-छुप कर हँसना
हर राह में दोस्तों का साथ निभाना
सही और गलत की पहचान कराना
वो अपना लंच छुपाकर खाना
वो दोस्तों का लंच झट से चट कर जाना
वो दोस्त का छूटा हुआ होमवर्क खुद करके टीचर को दिखाना
कभी-कभी बहाना बना कर स्कूल न जाना
और स्कूल जाते ही छुट्टी की राह देखना
कोई शरारत करके मासूम सा चेहरा बनाना
सबसे छुपाकर कक्षा में उत्पात मचाना
कभी-कभी किसी दोस्त को मिलकर सताना
दोस्तों के साथ हर दिन स्कूल आना-जाना
कभी-कभी घर देर से पहुचने पर माँ की डाट खाना
वो स्कूल के पल लौटकर न आएंगे|
हम बस उनको याद करके ही खुश हो जाएँगे |

⇨ अमीषा सहारण ,कक्षा - ग्यारहवीं 'कला'

यूँ होता है वक्त बर्बाद

लोगों की समस्याएं बीनना और
बिना माँगे उनकी मदद करना
समय को बर्बाद करता है
दूसरे को खुश करने के लिये
ऐसे कार्य करना जो
आपको नापसंद हो
ऐसी चीजों आदतों को लेकर
शिकायतें करना जिन्हे आप
किसी की मदद के बिना
खुद बादल सकते हैं
सुबह उठते ही चलाना
और सोशल मीडिया पर
घंटों वक्त बिताना
हर तरह की सामूहिक चर्चाओं
में शामिल होना हर मुद्दे
पर अपनी राय रखना
किसी कार्य को करने के
लिये घंटों विचार करना और
काम कल पर टालते जाना

⇨ अंशु यादव ,कक्षा - ग्यारहवीं 'विज्ञान'

जिन्दगी

लौट जाता हूँ वापस घर की तरफ ,
हर रोज थका हारा .....
आज तक समझ नहीं आया ,
कि काम करने के लिए जीता हूँ
या जीने के लिए काम करता हूँ
बचपन में सबसे बार बार पूछा गया सवाल
बड़े होकर क्या बनना है?
जवाब..... अब मिला
फिर से बच्चा बनना है
ए जिन्दगी मुनासिब होगा
मेरा हिसाब कार दे...
दोस्तों से बिछड़ कर ये हकीकत खुली
बेशक कमीने थे पर रौनक उन्हीं से थी
भरी जेब से दुनिया की पहचान करावाई
और खाली जेब से अपनों की
जब लगे पैसे कमाने तब समझ आया कि शौक तो
माँ बाप के पैसों से पूरे होते है
अपने पैसों से तो बस जरूरतें ही पूरी हो पाती हैं
हँसने का दिल ना हो तो भी हँसना पड़ता है
कोई जब पूछे कैसे हो
मजे में हूँ कहना पड़ता है
ये जिन्दगी का ड्रामा है दोस्तों
यहाँ हर एक को नाटक करना पड़ता है
माचिस की जरूरत यहाँ नहीं पड़ती यहाँ तो आदमी
आदमी से जलता हैं

दुनिया में सब साइंटिस्ट ढूंढ रहे हैं
कि मरीज पे जिन्दगी है या नहीं
पर आदमी यह नहीं ढूंढ रहा की जिन्दगी में
खुशी है या नहीं
नींद और मौत में क्या फर्क है..
किसी ने क्या खुबसूरत जवाब दिया हैं
नींद आधी मौत है.....और मौत मुकम्मल नींद है
ज़िन्दगी तो अपने ही तरीके से चलती है
औरों के सहारे तो ज़नाज़े उठा करते है
सुबह होती है, शाम होती है उम्र यूं ही तमाम होती है
कोई रोकर दिल बहलाता है और कोई हंसकर दर्द
छुपाता है
क्या करामात है कुदरत की
जिंदा इंसान पानी में डूबता है
और मुर्दा तैर कर दिखाता है
बस ये कंडेक्टर-सी हो गयी है ज़िन्दगी सफ़र भी रोज़
का है और
जाना भी कहीं नहीं|
छत ने कहा ऊंची सोच रखो
पंखे ने कहा ठन्डे से रहो
घड़ी ने कहा हर मिनट कीमती है
शीशे ने कहा कुछ करने से पहले अपने अंदर झांक लो
खिड़की ने कहा दुनियां देख लो
कलेंडर ने कहा अप-टू-डेट रहो
और दरवाज़े ने कहा अपनी मंजिल को पाने के लिये
पूरा जोर लगाओ
लकीरें भी बड़ी अजीब होती है
माथे पर खिंच जाएँ तो किस्मत बना देती है
ज़मीन पे खिंच जायें तो सरहद बना देती है
खाल पर खिंचें तो खून ही निकाल देतीं है
और रिश्ते पे खिंच जाएँ जो दीवार बना देतीं है
एक रुपया एक लाख नहीं होता .....मगर फिर भी
एक रुपया
एक लाख से निकल जाए तो वह एक लाख नहीं
रहता
हम आप लाखों दोस्तों में एक वो ही रुपैया है संभाल
के रखियेगा|
बस यहीं है ज़िन्दगी का सच|

⇨ अंशु ,सातवीं 'स'

पहेलियाँ

(अ) थैला लेकर आया चोर
बंद दुकान का ताला तोड़
ले गया सारा माल बटोर |

(ब) पेड़ है पर हवा नहीं
पानी है पर पीने को नहीं
पक्षी है पर चहचहाहट नहीं
सब कुछ होकर भी
कुछ नहीं मुझमें

(स) धूप में आता हूँ
छाँव में सूख जाता हूँ
हवा में उड़ जाता हूँ |

(द) बच्चे, बूढ़े सब भागे
सब मेरी आवाज
हूँ नहीं मैं बीमार
फिर भी खाती हूँ गोली |

(य) दो भाइयो का,
गजब है नाता
एक बिछड जाए तो
दूजा काम न आता |

(र) प्यास लगे तो पीले
भूख लगे तो खाले
ठंड लगे तो जलाले
ऐसा हूँ मैं |

(ल) तैली का तैल
कुम्हार का डंडा

हाथी की सूंड

नवाब का झंडा |

(व) सीधी सडक

बीच में अड़क

चार इलायची

एक अदरक|

उत्तर- डाकिया, तस्वीर, पसीना, बन्दूक, जूता, नारियल, दीया, हाथ

⇨ अनिशा-आठवीं -कक्षा , अ

पैगाम

जहाँ में हुआ उद्घोष
दहाड़ कर बोले श्री सुभाषचन्द्र बोस
"तुम मुझे खून दो
मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा" |
सीधे सादे थे गांधी
चलाई उन्होंने अहिंसा की आंधी
जिनका नारा था "करो या मरो"
फिरंगियों को देश से बाहर करो |
हुंकार कर बोले बाल गंगाधर
"स्वराज्य है मेरा जन्मसिद्ध अधिकार"
अंग्रेजों तुमको है धिक्कार
भारत पर है केवल हमारा अधिकार |
शहीदों की कुर्बानी रंग लाई
ख़त्म हो गई फ़िरंगियो से लड़ाई
संघर्ष के बाद हमने आजादी पाई
देश की बागडोर अपने हाथ आई |
नहरू जी ने संभाला शासन
जोशीले होते थे जिनके भाषण
दिया था उन्होंने पैगाम
भारतीयों के लिए "आराम है हराम" |
सजग रहे यदि देश का हर इंसान
शास्त्री जी ने कहा "जय जवान जय किसान"
कमर कस ले यदि हर नोजवान
तो बन जाए " मेरा भारत महान " |

⇨ ऋतुराज (' अ' नवमी)

इन्हें खिलने दो

बंध गया बचपन गरीबी के घेरे में ,
सिमट गई मुस्कान मजबूरी के फेरे में |
दूध अभी होठों से सूखा नहीं
जुट गए हाथ आय के साधनों में |
उम्र की मासूमियत अल्हड़पन अभी देखा नहीं ,
फँस गया जीवन रोजी-रोटी के जाल में |
खो गया बचपन जिनका , क्या पायेंगे वो यौवन ?
भूल गए पढ़ना-लिखना , रह गए अनपढ़ |
कोमल हाथों में अभी पतंग की डोर होनी थी ,
क्यों लाद दिया जीवन का बोझ उन हाथों में ?
नन्हें हाथ जो रेत के घरौंदे बनाने वाले थे ,
क्यों थमा दिया मिट्टी का तसला उन हाथों में ?
कंचे अंटे खेलने वाले ये हाथ,
तुम्हारी धड़कन हैं |
इन्हीं हाथों में तस्वीर है जमाने की ,
कुम्हलाया बचपन , कमर तोड़ देगा प्रगति की ,
कुचलों नहीं इन मासूम इरादों / हाथों को ,
देश का भविष्य है यह ,
इन्हें खिलने दो, पढ़ने लिखने दो |

⇨ ऋतुराज (' अ' नवमी)

वरदान

ईश्वर का पहला वरदान है
– माँ
हर इंसान का पहला प्यार
है – माँ
खुशियों के बाग में बागवान
है – माँ
प्रकृति के सौन्दर्य का
उपहार है – माँ
काँटों भरी राह में फूलों का
अहसास है – माँ
खुशियों के अनमोल ख़जाने
की राह है – माँ
गैरों की दुनियाँ में अपनों
का विश्वास है – माँ

⇨ अंकिता ('बी' सातवीं)

क्या लिखूँ

छप रही पत्रिका विद्यालय की ,
मिला मुझे यह समाचार,
सोचा मैं भी लिख डालूँ ,
कविता अपनी दो-चार |

क्या लिखूँ कैसे लिखूँ मैं,
समझ नहीं मुझको कुछ आता,
यूँ ही बैठे–बैठे मेरा,
सारा समय गुजर जाता |

कविता लिखूँ या लिखूँ कहानी ,
या लिख डालूँ कोई लेख
इसी सोच में बैठी हूँ मैं
अपना सर घुटनों पर टेक |

पूछा भाई कोई विषय बतलाओ ,
जैसा कोई न प्रसंग ,
जिसको पढ़कर सब रस विभोर हों ,
जागे मन में नई उमंग |

सोचा बहुत किन्तु लिखने को ,
कोई विषय न मिल पाया,
बीत गया दिन संध्या–रजनी ,
हृदय पुष्प नहीं खिल पाया |
इन्हीं विचारों में ही खोकर ,
मैंने तुकबंदी कर डाली,
टूटे–फूटे शब्दों में यह ,
छोटी कविता लिख डाली |

⇨ शबिना – कक्षा , नवमीं अ ,

ये बात समझ में आई नहीं

ये बात समझ में आई नहीं ,
और मम्मी ने समझाई नहीं |
दादा की पत्नी दादी ,
नाना की पत्नी नानी ,
चाचा की पत्नी चाची ,
मामा की पत्नी मामी ,
तो पापा की पत्नी पापी
क्यों नहीं होती ?

चाँद हमारा मामा कैसे ,
जबकि वो मम्मी का भाई ,
है ही नहीं |

मैं कैसे मीठा बोलूँ ,
जबकि मैंने कोई ,
मीठी चीज़ खाई ही नहीं |

ये बात समझ में आई नहीं,
और मम्मी ने समझाई नहीं |

⇨ जोनिका– नवमीं -कक्षा , अ

ENGLISH

WORDS OF WISDOM

Good manners are like flowers,
They have some magic powers.
Please, sorry and thanks,
Are like money in banks.
We should never forget to use
"Please, Sorry
and Thank You" in our talking,
We should always be polite in our talking.

MY BROTHER

Someone who hides my toy,
And Breaks my doll.
But he picks me up , whenever I fall.
Someone who stands by my side and holds my hand When things don't go well he helps me and understands.
Someone who makes funny faces to see how I react.
I love my brother and that's facts!

⇨ KANIKA (XI A)

MR. ZERO

Dear and respected Mr. zero
You are the greatest hero
In Mathematics and Arithmetic
You play your part fantastically
You are the greatest puzzle
When I subtract you from any number
You are as cool as cucumber
No loss , no gain , all my efforts in vain
And you at the last
The number increases very fast
If you are multiplicative with the target
The result is the smallest
and people think You are valueless and lowest
That is why ,
Students are sad to get you in their test.

⇨ RITIKA (IX A)

DO YOU KNOW…

The best day --- Today

Hardest thing to do --- To begin

The greatest handicap --- Fear

Easiest thing to do --- Finding faults

Most useless asset --- Pride

Most useful asset --- Humanity

The greatest comfort --- Work well done

Most disagreeable person--- The complainer

Best gift --- Forgiveness

Greatest knowledge --- Love

Greatest success --- Peace of mind

⇨ SHABINA (IX A)

D

A

Y

Monday is an active day.
Tuesday is so tiring.
Wednesday just goes away.
Thursday is simply boring.
Friday is again busy.
Saturday is little easy.
But Sunday is holiday.

⇨ KOMAL KUMARI (VIII B)

BORN TO DIE

If I die in a war zone,
Pack me up in a box.
Put my medals on my chest,
Tell my mother I did my best.

Tell my father not to bow,
I'm not gonna trouble him anymore.

Tell my brother to study perfect,
The keys of my bike are now his permanently.

Tell my sister not be upset,
her brother's not gonna rise even after sunset.

Tell my love not to cry,
Because I'm a soldier born to die.

JYOTI JANGIR (IX A)

EDUCATION

Learn and gain education,
Be free from confusion.
Drive out every doubt,
Be happy and be proud.

Only true education
Makes us better citizens.
It gives us prosperity,
Peace, pleasure and modesty.

Education, education
Uplifts a backward nation.
Helps a community,
And promotes humanity.

Education, education
Helps us with communication.
It creates vision,
Enables us to achieve the mission.

(TULSI, XII SCIENCE)

ACHIEVE THE MOST

The most selfish 1-letter word ***I*** avoid it.

The most satisfying 2-letter word ***we*** use it.

The most poisonous 3-letter word ***ego*** kill it.

The most used 4-letter word ***love*** value it.

The most pleasing 5-letter word ***smile*** keep it.

The most spreading 6-letter word ***rumour*** ignore it.

The most working 7-letter word ***success*** achieve it.

The most enviable 8-letter word ***jealousy*** distance it.

The most powerful 9-letter word ***knowledge*** acquire it.

The most essential 10-letter word ***confidence*** must have it.

⇨ DIKSHA YADAV (VIII B)

DISCIPLINE

D - Fourth letter of alphabet = 4%

I - Nineth letter of alphabet = 9%

S – Nineteenth letter of alphabet = 19%

C – Third letter of alphabet = 3%

I – Ninth letter of alphabet = 9%

P – Sixteenth letter of alphabet = 16%

L – Twelfth letter of alphabet = 12%

I – Ninth letter of alphabet = 9%

N – fourteenth letter of alphabet = 14%

E – Fifth letter of alphabet = 5%

TOTAL = 100% =>PAYAL, VIII B

THE BEAUTY OF MOTHER'S EYES

It was always in front of me,
But I could never see.
And all I wanted to be,
Was always to be free.
My words do not lie,
And I let my soul fly.
To see the beauty that lies,
Deep within my mother's eyes.

I hear the blowing wind,
That's telling me to go on.
Face the fears and so on,
And when I fall I mourn.
I'm restricted to the things,
That I know are no good.
So I pause to let my soul remind,
The look of reproach in mother's eyes.

In my life I face lot of troubles,
Some of them very horrible.
Dreams shattered to pieces,
And my hopes almost freezes.
Now I'm always in search,
For emotions that within emerge.
Now I yearn to see the beauty that lies,
Deep within my mother's eyes.

WHAT IS FRIENDSHIP?

Friendship is a glass,
Handle it with care,
Once it is broken,
It will never repair.

Friendship is a bond of affection,
Caring, sharing and pleasure,
A priceless treasure,
A joy forever.

Friendship increases happiness,
And abates misery,
By doubling our joy,
And dividing our grief.

⇨ BHAWANA, IX A

FRIENDS CORNER

Thank you for all the memories
That I hold so dear in my heart,
And as time goes by new ones will form
But the old ones shall never depart.

A true friend accepts who you are,
But also helps you to become who you should be.

Friends come and go like waves of the ocean,
But the true ones stick like an octopus on your face.

Some people arrive and make such a beautiful impact on your life,
You can barely remember what life was like without them.

A strong friendship doesn't need daily conversation or being together,
As long as the relationship lives in the heart,
True friends are never apart.

Notice the people who are happy in your happiness and sad for your sadness,
They are the ones who deserve special places in your heart.

Friendship is all about trusting each other,
Helping each other, loving each other,
And being crazy together.
FRIENDS are the most important ingredient
In the recipe called LIFE.

A friend who understands your tears
Is much more valuable than a lot
Of friends who only know your smile. => ANUSAYA, XII SCIENCE

IDIOMS

1) To turn over a new leaf

   Meaning : to make a new start, a fresh start

   Usage: A student's event greatly affected him and he "turned over a new leaf"

2) One common piece of advice

   Meaning: Not focus too much on the long term goal, just to take one thing at a time

   Usage: Balancing things is the most "common piece of advice" for a new entrepreneur.

3) Winds of change

   Meaning: Feeling of some kind of change

   Usage: After the student's protest were shown online, you could feel the "winds of change" all over the college campus.

4) To break new ground

   Meaning: The feeling of newness, when something revolutionary and different takes place

   Usage: The director's latest film "broke new grounds", in terms of box office results.

⇨ TULSI, XII SCIENCE

Best Friend

Best friend means different things to different people. Some insist that you can have only one best friend. Others assert that they have best friends for different aspect of their personalities.

Whatever the precise definition, your best Friend is the person who gets you. He understands who you are and what you are saying.The greatest distance can not separate best friends. You will always a feel and kinship with then and be able to instantly continue the friendship even after not talking for many years.

⇨ Sonika, XII Humanities

A CRAZY SPEECH

Good Morning!

Gentlemen and ladies and bald headed babies ! Last Thursday was good. Friday there was a mother's meeting for fathers only! And now I begin my upside down story, One fine morning at the middle of the night, two dead man got up for fight!!. Back to back they faced each-other! The deaf policeman heard the noise! And killed the two dead boys! And if you think my tale is untrue ! Go and ask the blind man he saw it too!!.

BY- HERAMB (CLASS-VIII, C)

⇨

Leave Exam Fear

Stop worrying about test scores,
Listen O my dear! leave exam fear.
Work hard and feel confident
Give it your best and god will see the rest.
In any situation never leave your cheer,
No one does best always in exam ,
Mistakes do occur in reality exam,
They give us training to always do better,
Never loose your heart and don't shatter.
Learn from your mistakes and improvise,
You will become more and more wise.
People will admire and successes will come near,
Nothing is certain in ever changing life,
Only good exam will never suffice.
Problems don't declare their sudden arrival,
Strength is needed for a peaceful survival.
Practical living is equally essential,
It brings out your real potential,
Opportunities lie in so many spheres.

⇨ Naveema Choudhary, 9th A

God made them all.

All things bright and beautiful,
All creatures great and small,
All things wild and wonderful.
The good god made them all.
Each little flower that opens,
And each little bird that sings,
He made their glowing colours,
And He made their tiny wings.
The purple headed mountains,
And the Rivers running by,
The morning and the Sunset,
That Brighten up the sky.
He gave us eyes to see,
And lips that we might tell,

How great is god almighty,
Who has made all things so well.

⇨ Tanushree, Class 6C

The Earth

Don‘t destroy the earth
Its already so bear.
Don’t cut down the trees
To them, it isn’t fair.
If you were in there place
Would you like to live?
They are so helpful to us,
But what do humans give the return?
Humans are very ungrateful
And simply could not come,
Even if the earth turn barren
And all become amess!
Don’t destroy the earth
It all reflects on us,
Saving the earth and all trees is
A big must

⇨ Neeraj kumar, 9th A

Teacher’s role in my life

Teacher to me is god
Who keeps us away from every proud.
Who teaches the moral of life
And tell us about the ups and downs of life.
Who tells us the importance of educations
And purpose us to face the nominations.
Who works very hard to make us learn lesson
and does it every day in every session.
Who is like a parent in school
and without whom life is not full.
Who teaches us to respect our elders
And tells us to take our responsibility on our shoulders.
This is what I think is right
and it is all about a teacher’s role in my life.

⇨ Ananika verma,
IXth B

Do you know?

1. What does JAL represent?
2. What does Cathay pacific represent?
3. What does KLM represent?
4. What does AL represent?
5. What does Aeroflot represent?
6. What does SIL represent?

7. What does PANAM represent?
8. What does Lufthansa represent?
9. What does QUANTAS represent?
10. What does SAS represent?
11. What does Garuda represent?
12. What does PIA represent?
13. What does BOAC represent?

Answer

1. Japan Air lines
2. Honk Kong Air lines
3. Royal Dutch Air lines
4. Air India
5. Russian Air lines
6. Singapore Air lines
7. PAN American Airlines
8. German Airlines
9. Australians Airlines
10. Scandinanan Airlines
11. Indonesian Airlines
12. Pakistan international Airlines
13. British overseas Airways Corporation

=> Halak Dudi, VII A

WHAT IS LIFE

Life is a gift – Accept it.
Life is a journey – Complete it.
Life is an adventure – To dare it.
Life is a love – To enjoy it.
Life is a goal – To achieve it.
Life is a promise – To fulfill it.
Life is a struggle – To fight it.
Life is a challenge – To meet it.
Life is a sorrow – To overcome it.
Life is a tragedy – To face it.
Life is a duty – To perform it.
Life is a game – To play it.
Life is a spirit – Realize it.
Life is a puzzle – To solve it.
Life is a beauty – To praise it.
Life is a song- Sing it.
Life is an opportunity- Take it.

⇨ Lakshita, Class – 5A

MY SCHOOL

When I first saw my school,
It looked so cool.
When I entered the class,
I found there were lots of dawnting
tasks.
When I meet my teachers,
They were amazing creatures.
When I saw my book,
it had a great look.
But when I saw my classmates,
All My fear Vanished as they were
mid and great.

⇨ Preksha Tetarwal,
VII 'A'

God

God is wise,
He helps us to rise.

God is nice,
He is our guide.

God is good,
He gives us food.

God is kind,
He makes our mind.

God is giving us light,
He makes our world look bright.

⇨ Ojesvi, Class – 5 A

CONFIDENCE

Once all village people decided to pray for rain, on the day of prayer all people gathered and only one boy came with an umbrella…… That's Confidence……

TRUST

Trust should be like the feeling of a one year old baby when you throw him in the air, he laughs …….because he knows you will catch him.

That's Trust……

HOPE

Every night we go to bed, we have not assurance to get alive next morning but still we have plans for the coming day.

That's Hope

WHAT IS KNOWLEDGE

Knowledge is respect

Try to protect it.

Knowledge is wealth

Try to get it.

Knowledge is light

Try to increase it.

Knowledge is treasure

Try to find it.

Knowledge is happiness

Try to enjoy and fulfill it.

BY- NUPOOR JANGIR

POEM

If you think you are beaten,
You are.
If you think you dare not,
You don't.
If you'd like to win but you think you can't,
It is almost a cinch that you won't.
If you think you will lose,
you are lost.
For out of world we find
Success begins with a fellow's will
It's all in the state of mind.
Life's battles don't always go
To the stronger or faster man,
But sooner or later the man who wins
Is the one who thinks he can !!!
"Have a great day & keep thinking positively".

BY – KOMAL CHOUDHARY,
CLASS- X (A)

OUR PARENTS

Our parents are one
But Stars are many.
They are our beauty
Care them it's our duty.
They love us a lot
They are the gift of God.
Whenever they pet you
Filled it with delight.
They are priceless
So to hurt them is senseless.

BY- KOMAL KUMARI
CLASS – VIII (B)

A Daughter

A daughter is a wonderful blessing, A treasure from above.
She's laughter, warmth and special charm,
She's thoughtfulness and love.

A daughter brings a special joy,
That comes from deep inside,
And as she grows to adulthood,
She fills our heart with pride.

With every year that passes,
She is more special then before,
Through every stage, through every age,
You love her even more.

No words can describe the warm memories,
The pride and gratitude too,
That comes from having a daughter,
To love and to cherish.....
Just like you..

(Komal Choudhary, X 'A')

A WONDERFUL INTERVIEW

Here is a wonderful interview of a candidate when he goes to find a job.

Chairman: Have your seat. What's your name?

Candidate: sir, PCS.

CM: What does it mean?

CD: Prakash Chandra sethi.

CM: What's your father's name?

CD: sir, PCS.

CM: Explain it?

CD: Puran Chandra Sethi.

CM: Where do you live?

CD: Sir, PCS.

CM: Make it clear?

CD: Purani City Sanganer.

CM: From where did you pass your exam?

CD: Sir, PCS.

CM: (Angrily) what do you mean by it?

CD: Polytechnic college, sanganer

CM: What's your age?

CD: Sir, PCS.

CM: Make it clear?

CD: Pure chabbis saal.

CM: What did you do before applying here?

CD: Sir PCS.

CM: What does it mean?

CD: Sir, Private coaching of slow cycling.

CM: What about your experience?

CD: PCS.

CM: Now what's that?

CD: Pure char saal.

CM: What are your hobbies?

CD: Sir, PCS.

CM: (Getting terrified) what is it?

CD: Photography, Cycling and skating sir.

After this, the chairman was angry and he could not control himself and asked the candidate to leave. The candidate asked about the result of his interview . The chairman said that he would be informed later on. The candidate gave his address-

Prakash Chandra sethi

Purani city sanganer.

After a few days, he received an envelope on which it was written "PCS". When he took the letter it was written;

"PCS" Pl. control your sense.

THE 26 ALPHABETS OF SUCCESS IN LIFE ….

A – Always speak truth.

B – Be punctual and regular to school.

C – Character is growth of glory.

D – Dedication is the best virtue.

E – Early to bed, early to rise make a man healthy, wealthy and wise.

F – Features are the pillar to success.

G – Glorify your nation.

H – Honesty is the best policy.

I – Industry is the key to progress.

J – Join the company of good people.

K – Kindness is an ornament.

L – Look before you leap.

M – Make hay while sunshine.

N – Never lose your temper.

O – Once a liar, always a liar.

P – Pride leads to fall.

Q – Question your ego.

R – Radiate a cheerful smile.

S – Self help is the best help.

T – Time and tide wait for none.

U – United we stand and divided we fall.

V – Virtue has its own reward.

W – Where there is will there is a way.

X – X-mas remind us of Jesus.

Y – Yield not anything but to your conscience.

Z – Zero has its own value.

⇨ VIJETA CHOUDHARY, VIII 'B'

RIDDLES

(Use mind and have fun!!!!)

1. **What kind of room has no doors or windows?**
2. **What kind of tree can you carry in your hand?**
3. **Which word in dictionary is spell incorrectly?**
4. **If you have me,you want to share me. If you share me, you haven't got me. What am I?**
5. **What gets broken without being held?**
6. **Feed me and I live, yet give me a drink and I die. What am I?**
7. **Forward I am heavy but backward I am not, tell me what am I?**
8. **He has married many women, but he has never been married. Who is he?**
9. **Imagine you are in a dark room. How do you get out?10.**
10. **Which creature walks on four legs in the morning, two legs in the afternoon and three legs in the evening?**
11. **There was a green house. Inside the green house, there was a white house. Inside the white house, there was a red house. Inside the red house there were lots of babies. What is it?**

Prity X 'A'

ANSWERS

1. Mushroom 2. A palm 3.Incorrectly 4. Secret
5. A promise 6. Fire 7. Forward I am TON and backward I am NOT
8. A priest
9. Stop imagining
10. MAN. He crawls on all fours as a baby, then walks on two feet as an adult and then walks with a cane as an old man.

NATIONAL AWARD WINNERS IN SPORTS

PARIKSHA PE CHARCHA 2.0

Spic Macay Program

Art Exchibition

Swachhata Abhiyan

Republic Day Celebration

Sadbhawana Diwas

Annual Day Celebration

International Yoga Day

Class 12th Batches 2018-19

XII- Science

XII- Arts & Commerce

हिंदी पखवाड़ा उत्सव

Training for Fire-Seafety

Toppers of Class 10th 2018-19
प्रेरणा जानू
96.4%
निकिता कंवर
96.2%
आलोक शर्मा
96%
किर्तिका
96%
दीक्षा
94.4%
निकिता
94.2%
निकिता सैनी
93.6%
दिक्षा
93.2%
गार्गी शर्मा
93.2%
रिंकु कुलहरी
92.6%
मनवीर सूरा
92.6%
धीरज
91.6%
चारु
91.4%
अभिषेक जाखड़
91.2%
सर्जीता
91.2%
भावेश
91%
मानशी
90.6%
अभिषेक
90%
नेहा
90%

Toppers of Class 12th 2018-19

SWINI BALODA
95.6%

MAMTA
92.6%

KANUPRIYA
92.2%

KU. SHIVAKSHI
91.6%

PULAKITA SHARMA
91.4%

SUCHITRA
91.4%

KHUSHBOO KUMARI
91.2%

RIYA CHOUDHARY
90.6%

ANAMIKA
90.4%

PRIYA DULAR
90.2%

ISHA CHOUDHARY
90%

CHURU BYPASS ROAD, JHUNJHUNU (RAJASTHAN) PIN-333001
PHONE NO-01592-232973 EMAIL ID- kvsjjn@gmail.com
WEBSITE- www.jhunjhunu.kvs.ac.in